ओ३म्

परिवार और समाज के नवनिर्माण का साहित्यिक मासिक

शांतिधर्मी

अप्रैल–2020

अपनी संस्कृति ही सर्वश्रेष्ठ है।

योग का मुख्य प्रयोजन : दुःखों से छूटना

क्या श्रीराम ने बाली का वध छल से किया था!

सबके भले के लिए प्रार्थना

जवानो! जवानी ना यूँ ही गँवाना!

आधुनिक जीवन में असाध्य रोगों पर योग का प्रभाव

देशभक्त बलिदानियों की मर्मान्तक उपेक्षा

आस्तिक–नास्तिक की नोंक झोंक

- बिन्दु बिन्दु विचार
- बाल वाटिका
- वेदानुशीलन

₹20

प्रकाशन का 22वां वर्ष

हितकारी प्रकाशन समिति हिण्डौन सिटी द्वारा पुन: प्रकाशित

डॉ० विवेक आर्य द्वारा सम्पादित दुर्लभ साहित्य अब जींद में उपलब्ध

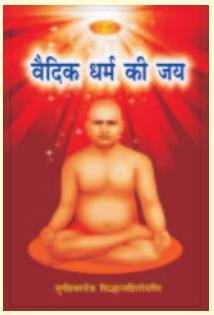

वैदिक धर्म की जय

(विविध आर्य सिद्धान्तों का संवाद रूप में प्रतिपादन

मूल लेखक :

पं० मुनीश्वरदेव सिद्धान्तशिरोमणि

इस संस्करण के सम्पादक :

डॉ० विवेक आर्य

पृष्ठ संख्या : १२०, मूल्य ८० रुपये

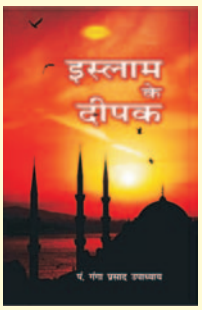

इस्लाम के दीपक

(मसाबीहुल इस्लाम का हिन्दी अनुवाद)

मूल लेखक : **स्व० पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय**

वर्तमान संस्करण के सम्पादक

डॉ० विवेक आर्य

पृष्ठ २६८, मूल्य : २०० रुपये

ऋषि बोध कथा

(ऋषि जीवन की गृहत्याग तक की प्रेरणायें)

मूल लेखक

स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

इस संस्करण के संपादक

डॉ० विवेक आर्य

पृष्ठ ९८ मूल्य ८० रुपये

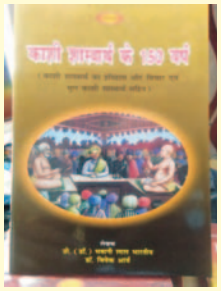

काशी शास्त्रार्थ के १५० वर्ष

(काशी शास्त्रार्थ का इतिहास और विचार एवं मूल काशी शास्त्रार्थ सहित)

लेखकद्वय :

प्रो० (डॉ०) भवानीलाल भारतीय

डॉ० विवेक आर्य

पृष्ठ ७०, मूल्य ४० रुपये

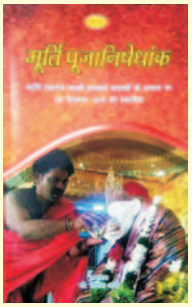

मूर्ति पूजा निषेधांक

(१९६९ में प्रकाशित आर्यमित्र साप्ताहिक का अंक, जिसमें मूर्ति पूजा के संबंध में अनेक उच्च कोटि के विद्वानों के लेखों का संकलन है)

तत्कालीन सम्पादक : उमेशचन्द्र स्नातक

इस संस्करण के सम्पादक

डॉ० विवेक आर्य

पृष्ठ : ११०, मूल्य : ६० रुपये

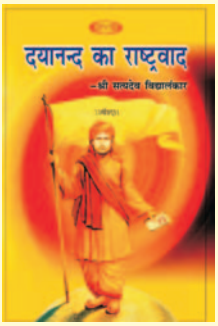

दयानन्द का राष्ट्रवाद

(मूल पुस्तक : राष्ट्रवादी दयानन्द)

मूल लेखक :

स्व० पं० सत्यदेव विद्यालंकार

वर्तमान संस्करण के सम्पादक :

डॉ० विवेक आर्य

पृष्ठ : ९४, मूल्य : ७० रुपये

मूर्त्तिपूजा शंका समीक्षा

मूल लेखक : स्व० पं० राजेन्द्र जी अतरौली

वर्तमान संस्करण के सम्पादक

डॉ० विवेक आर्य

पृष्ठ २८, मूल्य : २० रुपये

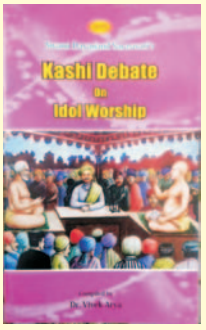

Kashi Debate On
Idol Worship

Compiled By
Dr. Vivek Arya

Pages : 50, Price : Rs. 25

□ **जींद में प्राप्ति स्थान** : शांतिधर्मी कार्यालय, पो बा० नं० 19, मुख्य डाकघर जींद (हरि०) व्हाट्स केवल 9996338552। □ ये पुस्तकें सीधे **हितकारी प्रकाशन समिति, हिण्डौन सिटी,** राजस्थान (दूरभाष 70142 48036) से भी मंगाई जा सकती हैं। □ ये पुस्तकें buyvadicsahitya@gmail.com से **आनलाईन** भी मंगाई जा सकती हैं। **नोट :** पुस्तकों का प्रेषण लॉकडाऊन खुलने के बाद ही संभव होगा।

संस्थापक एवं आद्य सम्पादक

पं० चन्द्रभानु आर्य

सम्पादक : **सहदेव समर्पित**
(चलभाष **09416253826**)
उपसम्पादक : **सत्यसुधा शास्त्री**
प्रबंध संपादक : **सुभाष श्योराण**
आदरी सम्पादक : **यज्ञदत्त आर्य**
सह-सम्पादक : **राजेशार्य आट्टा**
डॉ० विवेक आर्य
विधि परामर्शक : **डॉ० नरेश सिहाग एडवोकेट**
सहयोग : **आचार्य आनन्द पुरुषार्थी**
श्रीपाल आर्य, बागपत
महेश सोनी, बीकानेर
भलेराम आर्य, सांघी
कर्मवीर आर्य, रेवाड़ी
कार्यालय व्यवस्थापक: **रविन्द्रकुमार आर्य**
कम्प्यूटर सज्जा : **बिशम्बर तिवारी**

सहयोग राशि

एक प्रति	:	२०.०० रु॰
वार्षिक	:	२००.०० रु॰
दस वर्ष	:	१५००.०० रु॰

ओ३म्

शं नो मित्रः शं वरुणः शं नो भवत्वर्यमा।

परिवार और समाज के नवनिर्माण का मासिक

शान्तिधर्मी

प्रकाशन का बाईसवां वर्ष
अप्रैल, २०२० ई०

वर्ष : २२ अंक : ३ चैत्र-वैशाख २०७७ विक्रमी
स ष्टि संवत्-१६६०८५३१२१, दयानन्दाब्द : १६७

सहन-स्वरूप (खिलाड़ी) ६
संस्कृति का आधार (पुनर्प्रकाशन शांतिप्रवाह) ७
अपनी संस्कृति ही सर्वश्रेष्ठ है १०
आस्तिक नास्तिक की नौंक झौंक ११
क्या श्रभ्राम ने बाली का वध छल से किया था! (भ्रमोच्छेदन) १५
जवानो जवानी ना यूँ ही गँवाना (युवा प्रेरणा) १७
बलिदानियों की उपेक्षा : मर्मान्तक कथा (राष्ट्र-चिन्तन) १६
योग का मुख्य प्रयोजन है दुःखों से छूटना (आत्मिक उन्नति) २३
सबके कल्याण के लिए प्रार्थना (आत्मिक उन्नति) २५
असाध्य रोगों पर योग का प्रभाव (स्वास्थ्य चर्चा) २६
वेदज्ञ विद्वान् पं० सुधाकर चतुर्वेदी (श्रद्धांजली) २६
महाशय स्वरूपलाल आर्य : एक प्रणम्य व्यक्तित्व (श्रद्धांजली) ३०

कविता : ८, २६
कथा : युवाओं की प्रेरणा-६, लॉकडाऊन में मैंने पढ़ा-६ ठग बिल्ली-२६,
स्तम्भ : बालवाटिका-२८, भजनावली-३०, देसी कहावतें-३४

ईमेल- **shantidharmijind@gmail.com**

कार्यालय :

सम्पादक शांतिधर्मी, **पो बाक्स नं० 19**
मुख्य डाकघर जींद 126102
७५६/३, आदर्श नगर, सुभाष चौक, जीन्द–१२६१०२ (हरि०)
दूरभाष : 9996338552
ईमेल- **shantidharmijind@gmail.com**

पूर्ण सम्पादक मण्डल अवैतनिक है। पत्रिका में व्यक्त लेखकों के विचारों से सम्पादक मण्डल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी प्रकार के विवाद का न्याय क्षेत्र जीन्द होगा।

❐सहदेव समर्पित

वेद का विज्ञान

वेद का विज्ञान क्या है? इस के प्रचार प्रसार की आज पहले से ज्यादा आवश्यकता है। वेद के मुख्य चार विषय हैं- विज्ञान, कर्म, उपासना और ज्ञान। ऋषि दयानन्द विज्ञान की परिभाषा देते हुए कहते हैं कि विज्ञान उसको कहते हैं कि जो कर्म, उपासना और ज्ञान इन तीनों से यथावत् उपयोग लेना और परमेश्वर से लेके तृण पर्यन्त पदार्थों का साक्षात् बोध का होना, उनसे यथावत् उपयोग का करना। वेदों का मुख्य तात्पर्य भी यही है। इस संसार में हम दो प्रकार के पदार्थों से परिचित हैं। एक तो परमेश्वर और दूसरे उसके बनाए हुए पदार्थ। आज का विज्ञान परमेश्वर के बनाए हुए पदार्थों का ही अध्ययन करता है। वेद का विज्ञान कहता है कि भौतिक पदार्थों का साक्षात् भी तब तक पूर्णतया नहीं हो पाएगा जक तक कि उनके निर्माण और निर्माता का ज्ञान नहीं होगा। इसलिए भौतिक और आध्यात्मिक ज्ञान एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। बल्कि भौतिक ज्ञान के लिए आध्यात्मिक ज्ञान की महती आवश्यकता है। रचयिता का ज्ञान होने के पश्चात् यह भी प्रश्न उठता है कि इन्हें किस प्रयोजन से रचा है और इनका किस किस प्रकार ठीक ठीक उपयोग लिया जा सकता है। इसी में सारे संसार का रहस्य है।

यदि इन समस्याओं का समाधान हो जाए तो मनुष्य का जीवन सफल हो सकता है। जैसे जैसे हम विज्ञान में आगे बढ़ते हैं, त्यों त्यों हम ईश्वर के निकट होते जाते हैं। संसार का प्रत्येक अवयव हमें ईश्वर की जानकारी दे रहा है। इस संसार का मुख्य प्रयोजन ईश्वर ही है। विज्ञान का लक्ष्य भी ईश्वर ही है। ज्ञान, कर्म और उपासना का समुचित व्यवहार करके धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति मनुष्य जीवन का उद्देश्य है। जब मनुष्य के ज्ञान में यह दृढ़ धारणा हो जाती है कि इस संसार में सभी व्यवहारों का प्रयोजन ईश्वर ही है तो उसके कर्मकाण्ड पर भी इसका प्रभाव पड़ता है। कर्मकाण्ड से प्रायः यही अभिप्रायः लिया जाता है कि जो ये हवन, संस्कार आदि और पूजा पाठ आदि हैं इन्हीं का नाम कर्मकाण्ड है। जबकि कर्मकाण्ड तो संपूर्ण क्रियाकलाप का नाम है। यज्ञ, अग्निहोत्रादि तो उसका एक भाग हैं। कर्मकाण्ड के दो भाग है- एक परमार्थ और दूसरा लोकव्यवहार। परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना करना और ईश्वराज्ञारूप धर्म का पालन करना। धर्म का स्वरूप न्यायाचरण है। न्यायाचरण उसको कहते हैं कि जो पक्षपात छोड़के सब प्रकार से सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करना। धर्म का आचरण करना ईश्वर की आज्ञा का पालन करना ही है और यह ईश्वर के स्वरूप को यथावत् समझे बिना यथार्थतः नहीं हो सकता। इस धर्म के पालन में जाति, मजहब, देश, काल की बाधाएँ नहीं आतीं। जब परमेश्वर की प्राप्ति को मुख्य लक्ष्य मान कर कर्म किए जाते हैं, तो उन्हें निष्काम कर्म कहते हैं और जब संसार के भोगों की इच्छा से कर्म किए जाते है तो उन्हें सकाम कर्म कहते हैं।

वेदोक्त धर्म का पालन करने से ही मनुष्य को अपने जीवन के लक्ष्य की प्राप्ति हो सकती है। वह वेदोक्त धर्म क्या है, उसके कुछ अंश हम पाठकों के लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका से उद्धृत करते हैं- देखो, परमेश्वर हम सबों के लिए धर्म का उपदेश करता है कि हे मनुष्य लोगो! जो पक्षपात रहित न्याय, सत्याचरण से युक्त धर्म है तुम लोग उसी को ग्रहण करो। उससे विपरीत कभी न चलो। किन्तु उसी की प्राप्ति के लिए विरोध को छोड़कर परस्पर सम्मति में रहो। जिससे तुम्हारा उत्तम सुख सब दिन बढ़ता जाए और किसी प्रकार का दुःख न हो। तुम लोग विरुद्ध वाद को छोड़कर परस्पर अर्थात् आपस में प्रीति के साथ पढ़ना, पढ़ाना, प्रश्न उत्तर सहित संवाद करो। जिससे तुम्हारी सत्यविद्या नित्य बढ़ती रहे। तुम लोग अपने यथार्थ ज्ञान को नित्य बढ़ाते जाओ। जिससे तुम्हारा मन प्रकाशयुक्त होकर पुरुषार्थ को नित्य बढ़ावे। जिससे तुम लोग ज्ञानी होके नित्य आनन्द में बने रहो। और तुम लोगों को धर्म का ही सेवन करना चाहिए अधर्म का नहीं। जैसे पक्षपात रहित धर्मात्मा विद्वान लोग वेदरीति से सत्यधर्मों का आचरण करते हैं वैसे तुम भी करो। क्योंकि धर्म का ज्ञान तीन प्रकार से होता है। एक तो ध र्मात्मा विद्वानों की शिक्षा, दूसरा आत्मा की शुद्धि तथा सत्य को जानने की इच्छा और तीसरा परमेश्वर की कही वेदविद्या को जानने से ही मनुष्यों को सत्य असत्य का यथावत् बोध होता है, अन्यथा नहीं।

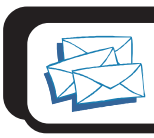

आपकी सम्मतियाँ

शांतिधर्मी पत्रिका की २२ वर्षों अर्थात २६४ अंकों की यात्रा एक आत्मसंतुष्टि दायक संघर्ष की कहानी है। इसके लिए मेरे अंत: करण से आप को कोटिश: बधाई। मैं इसके उन्नयन का आकांक्षी संभवतया जानता हूं कि आपने आर्थिक संसाधन न होते हुए भी स्वैच्छिक धन से मानवीय मूल्यों के वशीभूत इसका सफल संचालन किया है। काल के थपेड़ों से लड़ते हुए महाशय चंद्रभानु जी (आपके पिताश्री) ने इसे शीर्ष स्थान पर ला खड़ा किया। इसका प्रमुख और एकमात्र उद्देश्य राष्ट्रीय भावना से ओतप्रोत परिवार और समाज के नवनिर्माण का, देशभक्तों के इतिहास से भिज्ञ कराने का, सामयिक चिंतन से जीवन की समस्याओं और उनके निराकरण का सन्देश विशेषत: चुनौती के रूप में रहा है। प्रकाशन के आरंभ से ही मैं इससे जुड़ा हूँ और मुझे लगता है कि यह पत्रिका सभी मानवीय मूल्यों के पक्षों को स्पर्श करती हुई समाज को जाग्रत करने का कार्य कर रही है। वैचारिक दृष्टि से पत्रिका में प्रकाशित लेखों के भाव ऊंचे हैं। भाषा की प्राञ्जल प्रस्तुति प्रशंसनीय है। समष्टिगत चेतना का भाव लिए, महान आदर्श को उजागर करती हुई, सद्भाव को ध्वनित करती हुई पत्रिका संस्कृति की पोषिका बनकर देशप्रेम से सराबोर नवयुवकों को स्वच्छ समाज निर्माण के प्रति आह्वान कर रही है। इतना ही नहीं, आपकी वर्तनी विद्वानों के आलस्य में सोते हुए मानस को जाग्रत करने का काम भी कर रही है। मैं कतिपय शब्दों के द्वारा ही सम्मति देकर धन्यवाद करना चाहूंगा कि आप इसी प्रकार लेखनी की प्रभा से सतत साधना की उमंग को बरकरार रखें। हम विश्व को ज्ञान की रोशनी देते आए आर्यों की संतान हैं। आज हमें भी हालात बनाने होंगे कि पुन: विश्व को सिर उठाकर कह सकें

हम अपने वक्त की सूरज हैं, हम को पहचानो।
जलेंगे हम तो सितारों में रोशनी होगी।।

आर्ष वाक्य 'चरैवेति-चरैवेति' को चरितार्थ करते हुए चलते चलो-- चलते चलो। हम भी आपके सफर में शरीक हैं।

महिपाल आर्य (इतिहासकार साहित्यकार) 9461770 41

✉ ✉ ✉

शांतिधर्मी का मार्च, २०२० का अंक प्राप्त हुआ। आपकी रहनुमाई में शांतिधर्मी वैदिक प्रचार समिति द्वारा आयोजित होली महोत्सव की झलकियां उत्साह बढ़ाने वाली थीं! आत्मचिंतन में संपादकीय- 'नवसंवत् शुभ हो!' लाजवाब रहा! यह हमें अपने गौरवमय प्राचीन अतीत की शानदार सभ्यता, संस्कृति, परंपरा, रीति-रिवाजों तथा आर्यव्रत होने पर गर्व करने की प्रेरणा देता है। यह सचमुच एक अफसोस की बात है कि हम वर्तमान इतिहास को ईसा के जन्म अर्थात् २०२० को सम्मुख रखकर पढ़ते और पढ़ाते आ रहे हैं। इसी अवधि में जो कुछ हमारी परंपराएं, व्यवहार, चरित्र बना उसी के मुताबिक जीने की हमारी आदत बन गई है। हम अपने प्राचीनतम इतिहास के बारे में तथा रीति-रिवाजों के बारे में कुछ नहीं जानते। हमारी वर्तमान पीढ़ी को देसी महीनों के नाम, पुराने रीति-रिवाजों, अमावस्या, पूर्णमासी, संक्रांत आदि बातों का कुछ भी पता नहीं, वह तो पश्चिमी सभ्यता के रंग में रंगे जा चुके हैं। उन्हें इस बात का ध्यान ही नहीं कि बहुत सारी बातों को लेकर भारत विश्वगुरु रहा है। प्राचीन ग्रंथों में सभी प्रकार का ज्ञान संचित है जो विश्व के विकास, कल्याण, सुरक्षा तथा संरक्षण में सहायक हो सकता है। नव संवत्सर पर संपादकीय लेख लिखकर आपने हमें अपने अतीत के बारे में जागरूक होने के लिए प्रोत्साहित किया है इसके लिए धन्यवाद। दूसरा संपादकीय 'कोरोना भगवान' ज्ञानवर्धक तथा दिलचस्प रहा! परमात्मा है कि नहीं, सृष्टि की रचना से लेकर आज तक इस विषय पर वाद विवाद जारी है! जो कुछ हो रहा है उसके लिए कुछ लोग तो इसे परमात्मा की मर्जी मानते हैं और जो लोग परमात्मा पर विश्वास नहीं रखते, जिन्हें नास्तिक कहा जाता है वे लोग विभिन्न घटनाओं के लिए अपने तर्क-वितर्क प्रस्तुत करते हैं! सृष्टि की रचना को लेकर भी अलग-अलग लोगों के अलग-अलग विचार हैं! वर्तमान समय में कोरोना वायरस की भी व्याख्या लोग अपने-अपने ढंग से करते हैं। इसे हम भगवान तो नहीं कह सकते, हां इस समय यह एक बहुत बड़े खतरनाक शैतान का रूप धारण कर चुका है जिसे परमात्मा किसी ना किसी तरीके से काबू करने के लिए मनुष्यों को सूझबूझ देगा। पण्डित चमूपति का लेख 'खिलाड़ी' लाजवाब रहा! ज्ञानेंद्र साज व सहदेव समर्पित की रचना पसंद आई! प्राचार्य पृथ्वीसिंह शेरावत का लेख अत्यंत महत्त्वपूर्ण और अनुकरणीय है। कहा गया है कि धर्म के बिना मनुष्य पशु समान है। रामफल आर्य का लेख 'क्या होता है सनातन' ज्ञानवर्धक है। सुखबीर सिंह दहिया की रचना 'सुख कहां है, कहां नहीं' अच्छी लगी।

प्रोफेसर शामलाल कौशल (941619045)
मकान नंबर 975 बी
ग्रीन रोड, रोहतक 124 001 हरियाणा

अनुशीलन सामवेद : आग्नेय पर्व

सहन स्वरूप

–लेखक: पं० चमूपति

अग्ने वाजस्य गोमत ईशानः सहसो यहो।
अस्मे देहि जातवेदो महि श्रवः।।३।।९९

ऋषिः–गोतमः–अत्यन्त गो अर्थात् सरलतम,
अथवा सर्वश्रेष्ठ गति–ज्ञानगमनप्राप्तिमान्।

हे (सहसः) बल की (यहः) संतान (अग्ने) अग्नि–देव! तुम (गोमतः) संस्कृति से युक्त (वाजस्य) बल के (ईशानः) अधिपति हो। (जातवेदः) हे जीव–जात में विद्यमान जीवन–रहस्य के ज्ञाता! (अस्मे) हमें (महि) महती (––वः) श्रुति (देहि) प्रदान करो।

यज्ञ क्या निर्बलों का हथियार है? बल का प्रदर्शन क्या अत्याचार ही में हो सकता है? प्रेम का आश्रय क्या वही लोग लेते हैं जिनमें लड़ने की शक्ति नहीं होती?

इसमें संदेह नहीं कि जब कोई भिखारी द्वार–द्वार पर पुकारता है–'दया धर्म का मूल है, पाप–मूल अभिमान', तो जी विवश होकर हंस देता है। तुलसी का दोहा एक मनुष्य के मुँह में आ पड़ा जिसका उपदेश भिक्षा का रूपान्तरित वेष है। उससे कौन दया की शिक्षा लेने लगा? दया की शिक्षा देने का अधिकारी वह है जो स्वयं दया का अधिकारी न हो। ऐसे ही प्रेम और सहयोग जो यज्ञ के दूसरे नाम हैं। ये अहिंसक हथियार उसी वीर के हाथ में शोभा देते हैं जिसे अपनी हिंसा का भय न हो।

मनुष्य शक्त होकर सहन कर जाए–यह बल की पराकाष्ठा है। पिता पुत्र की सहता है, आचार्य शिष्यों की सहता है। और फिर माँ तो है ही सहन–स्वरूप। क्या ये तीनों निर्बल हैं। लड़का जितना छोटा हो, उसकी उतनी अधिक सही जाती है। क्या वह अधिक बलवान होता है? यज्ञ नाम ही सहन का है। दृष्टि–भेद का सहन, मन–भेद का सहन और यदि कोई सिद्धांत की बात न हो तो कुछ हद तक अत्याचार का भी सहन। छुई–मुई बनने से संघटन नहीं हो सकता। संघटन तथा सहन पर्याय है। अग्निदेव! तुम सचमुच सहन की संतान हो– शक्तिसहित सहन की। निर्बलता तुमसे कोसों दूर है। भय निर्बलता का एक रूप है तो क्रोध दूसरा। यज्ञ इन दोनों का विरोधी है।

मानव–जाति का विशेष अन्न तथा बल ज्ञान ही है। सामूहिक ज्ञान संस्कृति का रूप धारण करता है। जाति की विद्या, उसकी कला तथा विज्ञान में प्रकट होती है। धर्म, दर्शन, व्यवसाय, आचार–विचार–ये सब संस्कृति के अंग हैं। इन सबका विकास यज्ञ ही का परिणाम है। मानव सन्तान के ऐसे यज्ञ के कर्ता–धर्ता, हे अग्नि–देव! तुम्हीं हो। कोई अकेला न विज्ञानी हो सकता है न कलाकार। यह खेती ही संघटन की है। अग्नि–देव ही इस खेती को बोता, उगाता है और फिर पकाता है।

हे सब सत्य–विद्याओं के आदि –मूल! हे उन सब पदार्थों के आदि–मूल जो विद्याओं से जाने–जाते हैं। हे जात–वेद! सब प्रादुर्भूत पदार्थों में विद्यमान, सबके अंदर–बाहर की जानने वाले अग्नि–देव! हमें तो तुम्हारा ही संदेश चाहिए। हमारे कानों में तुम्हारी श्रुति पड़े। हमारे हृदय में तुम्हारी वह सूक्ष्म तीखी–सी आवाज– जो सन्नाटे में बोलती है, हमेशा अपनी जल–तरंग उठाती रहे, उठाती रहे।

अग्नि–देव! हमारे हृदयों में बोलो! तुम्हारे भक्तों का अन्न तुम्हारा सुरीला–नशीला नाद है। तुम्हारे उपा सकों का बल तुम्हारी अलौकिक संगति है। तुम्हारे पुजारियों का ज्ञान तुम्हारी मूक, फिर सदा सुनाई दे रही श्रुति है। अग्नि–देव! हमारी संस्कृति रूप कामधेनु– तुम हो।

हम बछड़े हैं, तुम गाय। हम बालक हैं, तुम माता। तुम्हारी पुकार हमारा दूध है।

हे प्रभु कल्याणी मति दीजे।
पाप भावनायें सब की सब मेरे मन से छीजे।
ज्योति पुञ्ज के एक सहारे,
भूत मात्र के स्वामी प्यारे।
धार रहे हो विश्व सकल को
सुखमय स्तुति सुन लीजे।।
सब जन बल तुमसे ही पावैं।
सकल देव प्रभु तुमको ध्यावें।
तेरी शरण अमृत अशरण मृत
सुखमय स्तुति सुन लीजे।।

–स्वामी आत्मानन्द जी

शांतिप्रवाह
(पुनर्प्रकाशन)
अप्रैल २०१०

संस्कृति का आधार

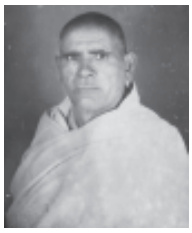

❐स्व० श्री चन्द्रभानु आर्य संस्थापक शांतिधर्मी

जो मानव का निर्माण करती है, इहलोक और परलोक को आनन्दमय बनाती है, वहीं संस्कृति है, इसके विपरीत सब विकृति है। संस्कृति की रक्षा उसका पालन करने से होती है। जो सांस्कृतिक आक्रमण संस्कृति को नष्ट करने के लिए होते हैं, वे तभी होते हैं, जब आक्रमणकारियों को संस्कृति अपने स्वार्थों में बाधा के रूप में दिखाई देती है। जब संस्कृतिविहीन लोगों के पास ताकत बढ़ती है तो उन्हें अपने सामने संस्कृति अपना सिर ताने खड़ी दिखाई देती है। भारत के साथ यही हुआ है। सांस्कृतिक या राजनैतिक आक्रमणों के समय, चाहे वे धन लूटने के उद्देश्य के लिए हुए हों, या राजसत्ता प्राप्त करने के अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए– उन्हें धन लूटने में तो महान प्रतिरोध का सामना करना ही पड़ा, सबसे बड़ा प्रतिरोध उनकी सत्ता को स्वीकार करने के लिए हुआ। चाहे इतिहास कहता हो, हम हजारों साल गुलाम रहे, पर उस अधःपतन के काल में भी पूर्ण भारत में कभी विदेशी दासता को स्वीकार नहीं किया गया। चाहे महाराणा प्रताप का मेवाड़ हो, चाहे आर्य गौरव महाराज शिवाजी का संघर्ष हो, चाहे पंजाब में गुरुओं और बंदा बैरागी की बलिदानी परम्परा रही हो, विदेशी सत्ता को कभी चैन से नहीं बैठने दिया गया। यह संस्कृति रक्षा की जिद ही थी, कि हजार साल बीतने पर भी देशवासियों में स्वतंत्रता की उत्कट भावना जीवित रही। पीढ़ियाँ मिट गई, लेकिन वह भावना न मिटी। इसीलिए विदेशी सत्ता ने इस उत्कट भावना के मूल यानि संस्कृति को नष्ट करने का प्रयास आरम्भ किया। अंग्रजों को जाने के ९०–१०० साल पहले यह बात समझ में आई, और उन्होंने संस्कृति और संस्कारों को शिक्षा पद्धति में आमूल चूल परिवर्तन के द्वारा नष्ट करने की योजना बनाई। उससे पहले मुसलमानों ने धार्मिक स्थलों को तोड़कर उसे नष्ट करने का प्रयास किया लेकिन वे सफल न हुए। अंग्रेजों ने लार्ड मैकाले की योजना पर काम करते हुए उसका क्षरण किया, पर वे भी उसको पूर्णतः नष्ट न कर सके। उसके समानान्तर पारम्परिक शिक्षा पद्धति चलती रही। जो काम गुलामी के हजार साल में नहीं हो सका, वह आजादी के तिरेसठ सालों में आसानी से होता हुआ दिखाई दे रहा है।

हमारी संस्कृति के कुछ मूल आधार हैं। वे धीरे धीरे समाप्त हो रहे हैं। हम कहते हैं कि यह वैदिक संस्कृति है। यह वेद पर आधारित है। वेद ही ऐसा ईश्वरीय ज्ञान है, जो सम्पूर्ण मानवता के लिए है, उसमें किसी स्थान, भाषा, जाति, वर्ग या देश के प्रति कोई पक्षपात नहीं है। वेद मार्ग पर चलने से ही पूरी मानवता का कल्याण हो सकता है। वेद की भाषा वैदिक संस्कृत है जिससे संसार की अन्य सभी भाषाओं का निर्माण हुआ। वेद के अनेक लोगों ने अर्थ किए। प्राचीन आचार्यों के किये हुए अर्थों को उपेक्षित करके मध्यकाल में अनेक वेतनभोगी या मतवादी लोगों ने अपने मत के अनुसार उनके अर्थ किये। यह तो हम आज भी देख सकते हैं। ईसाई लोग 'ईशावास्यमिदं' मंत्र में ईसा मसीह को देखते हैं। कोई 'कविर्मनीषी' में कबीर को देखते हैं। इस्लाम के अनुयायी 'नराशंस' में मुहम्मद साहब को देखते हैं। इसी प्रकार वाममार्गी मत के अनुयायियों ने अपने मत की मान्यताओं के अनुसार अश्लील और असंगत अर्थ किये। कुछ काल तक उनका पठन पाठन होता रहा। बाद में गौतम बुद्ध आदि बुद्धिमान पुरुषों ने उनका विरोध किया। शंकराचार्य जैसे संस्कृति रक्षकों ने उन्हें पुनः प्रतिष्ठित करने के प्रयास किये। पर उनका थोड़ी अवस्था में ही देहान्त हो गया। फिर भी वेद को भारतीय जनमानस के हृदयों से अप्रतिष्ठित नहीं किया जा सका। वोडेन के धन से आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के माध्यम से मैक्समूलर आदि धन के लालच में इनके अर्थों में घालमेल कर इनकी अप्रतिष्ठा करने का प्रयास करते रहे। इसी काल में महर्षि दयानन्द का आगमन हुआ। उन्होंने आर्ष विद्या और वेदांगों के आधार पर पुनः वेदों (यजुर्वेद पूर्ण और ऋग्वेद अपूर्ण) के वास्तविक अर्थ दुनिया के सामने रखे तो वेद विरोधियों के होश उड़ते दिखाई देने लगे। स्वामी दयानन्द ने सही वेदार्थ को प्रतिष्ठित करने के लिए अंग्रेज अधिकारियों को सप्रमाण लिखा। वे उन वेदार्थों को प्रतिष्ठित करते तो उनकी तो सारी योजना ही ध्वस्त हो जाती। पर वे चालाक लोग थे। उन्होंने उन वेदार्थों की यथार्थता का निर्णय उन लोगों को सौंप दिया जो शास्त्रार्थों में स्वामी दयानन्द के आगे बोल भी नहीं पाते थे। वे क्यों स्वामी दयानन्द के अर्थों वाले वेदों को महत्त्व देते।

यह एक बड़ा रोमांचकारी और विडम्बनापूर्ण घटनाक्रम है। इससे भी बड़ी विडम्बना तो यह है कि आज स्वतंत्र भारत में भी वास्तविक वेदार्थ की प्रतिष्ठा नहीं हो पाई है। वेद विद्या के अभाव में ही संस्कृति के अन्य आधार– आस्तिकता, सदाचरण, चरित्र, ब्रह्मचर्य, गाय आदि भी नष्टप्रायः ही हो रहे हैं। चरित्रहीन 'धर्मगुरु' पांच सितारा होटलों में ऐश करते हैं और युवकों को गुरुकुलों में चरित्र की शिक्षा देने वाले आचार्य लोग पूरे साल का दाना पानी संग्रह करने में ही त्रस्त रहते हैं।

जरुरी है सामाजिक दूरी

फीके पड़ गए सबके चेहरे,
सहमी दुबकी दुनिया नूरी।
कोरोना ताल की तोड़ो लहरें,
जरुरी है सामाजिक दूरी।।

सिर झुका करो अभिवादन,
ना हाथ से हाथ मिलाओ।
सुरक्षा का यह अभेद्य साधन,
रख दूरी सबका साथ निभाओ।

'हम से हिम्मत' है वतन की,
सब हैं इसके सजग प्रहरी।
बन पर्वत बदलें दिशा पवन की
'देश-धरा' पर अर्पित केहरी।

'कुछ सिखा' यह वक्त गुजरेगा,
फिर खिल उठेगी मानवता।
इंसान फिर से मुस्करायेगा,
रहे हमारी 'अमर-सभ्यता'।

सतर्कता के संकुल पहरे,
रहे खाली हाथ कोरोना अहेरी।
कोरोना ताल की तोड़ो लहरें
जरुरी है सामाजिक दूरी।।

प्रा० सतीश कुमार, नारनौंद, हिसार
(8295 960700)

कोरोना कुण्डलियाँ

❐शाकुन्तला काजल 'शाकुन' जींद

विनती नित देखो करें, अस्पताल की टीम।
हल्के में मत लीजिए, बेबस हुए हकीम।।
बेबस हुए हकीम, विषाणु लाईलाज है।
सुन लो राम रहीम, बचाव ही ईलाज है।।
'शाकुन' को ऐतराज, बढ़ रही फिर भी गिनती।
आ भी जाओ बाज, अर्ज है सुन लो विनती।।

बम कोरोना का लिए, घूम रहे हैं लोग।
हल्के में मत लीजिए, नहीं मात्र संयोग।।
नहीं मात्र संयोग, संभलना है जरूरी।
ये है ऐसा रोग, दवा है जिसकी दूरी।।
कहे 'शाकुन' हर रोज, अखंडता में बड़ा दम।
इसमें ऐसा ओज, ध्वस्त करता सगरे बम।।

कोई तो चिराग जलाईये।

आओ अभियान कोई ऐसा चलाएँ,
सबको समानता का अधिकार दिलाएँ।
यहाँ आइये, स्वागत है आपका,
आप भी तो हिस्सा हैं समाज का।।
बदल रहा है मिजाज मौसम का,
पतझड़ में कोई फूल खिलाइये।
मानव ही आज दानव हुआ,
आँधी में कोई तो चिराग जलाइये।
नफरत के आगे किसकी चलती,
'बोहल' नफरत को और ना फैलाईये।

डॉ० नरेश सिहाग 'बोहल' एडवोकेट
सम्पादक बोहल शोध मञ्जूषा, भिवानी

जीवन को संभालो!

मुश्किल हो तो, रूखी सूखी खा लो
अपने गुणों और दूसरे के अवगुणों को
कभी मत उछालो
बुरे काम से मुंह छुपा लो
अच्छे काम को कभी भी न टालो
कसूर हो अपना
दूसरे पर मत डालो
पाप तो उतरेगा नहीं
चाहे कितना गंगा नहा लो
संतोष तो मिलेगा नहीं
कितना धन कमा लो
ईश्वर जानता है सब
कितना भी पाप छुपा लो
शांति तो घर में ही मिलेगी
बाहर कितना नाम कमा लो
आशीर्वाद तो मां-बाप ही देंगे
जगराते चाहे कितने करा लो
असली मंदिर तो दिल ही है
मंदिर में कितना भी चढ़ावा चढ़ा लो
अच्छे संस्कारों बिना कुछ नहीं होगा
पोथियां चाहे कितनी भी पढ़वा लो
बिना त्याग के कुछ भी नहीं होगा
रिश्ते चाहे लाख बना लो।।

प्रोफेसर शामलाल कौशल 94163 590 45
ग्रीन रोड, रोहतक १२४ ००१ हरियाणा

आईना व्यंग्य संग्रह दिखाता है समाज का प्रतिबिंब

मध्यमवर्गीय परिवार में गृहिणी होने के बाद पुस्तकें पढ़ने के लिए समय निकालना बड़ी टेढ़ी खीर है। मेरे बड़े बेटे नरेंद्र सोनी, जो कि गुरु जंभेश्वर विश्वविद्यालय में पीएचडी शोधार्थी हैं, ने लाकडाउन के दौरान मुझे व्यंग्य-संग्रह पढ़ने का प्रस्ताव किया। हरियाणा के राज्य औषधि नियंत्रक श्री नरेंद्र आहूजा विवेक द्वारा लिखित व्यंग्य-संग्रह 'आईना' को पढ़ने के बाद पाठकों के लिए अपने विचार प्रस्तुत कर रही हूं।

इस पुस्तक की भूमिका प्रख्यात कवि व आलोचक डॉ० अशोक चक्रधर ने लिखी है। लेखक ने पुस्तक में सहजता को साधा है तथा अपने व्यंग्य लेखन के दायरे में उन विषयों को लाया जिनके प्रभाव से हमारा समाज त्रस्त व ग्रस्त है। समाज की खुशी के पीछे जो त्रासदी छुपी हुई है, उसको हम आज व्यंग्य के जरिए ही समझ सकते है। पुस्तक में २८ व्यंग्य आलेख हैं। पुस्तक में व्यंग्य विधा के पाश्चात्य विद्वान जैफर का कथन भी दिया गया है कि व्यंग्य आरी नहीं तलवार की तरह होना चाहिए जो कई बार नहीं, एक ही बार में काट कर रख दे। लेखक सरकारी व्यवस्था का अंग है इसलिए उन्होंने हमाम के अंदर रहकर इसके नग्न स्वरूप को देखा और समझा है। पुस्तक में 'सरकारी बाबू', 'लालफीताशाही', 'अफसर', 'अफसर की बीबी' जैसे व्यंग्य शामिल हैं। नरेंद्र आहूजा विवेक जी ने सीधे व सरल शब्दों द्वारा समाज के सभी अंगों का शब्द चित्रण करने का बहुत अच्छा प्रयास किया है। एक राजपत्रित अधिकारी ने समाज में व्याप्त विसंगतियों, कुरीतियों, सरकारी कुव्यवस्था पर व्यंग्य लिखे हैं जो वास्तविकता के निकट हैं। 'आईना' व्यंग्य संग्रह सही मायनों में समाज को आईना दिखाता है।

❑उषा सोनी
ग्राम बिठमड़ा तहसील उकलाना जिला हिसार – १२५११३

युवाओं की प्रेरणा बनी रुक्मिणी रायर आइएएस

आज हम आपको एक ऐसी लड़की के बारे में बताएंगे जो छठी क्लास में फेल हो गई थी। मगर उन्होंने हार नहीं मानी और कड़ी मेहनत के बल पर पहले अटेम्प्ट में ही यूपीएससी का टेस्ट पास कर लिया और IAS बनी। २०११ में चंडीगढ़ की रुक्मिणी रायर ने यूपीएससी की परीक्षा में देशभर में दूसरा स्थान हासिल किया था। उन्होंने टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज से मास्टर्स डिग्री लेने के बाद यूपीएससी की परीक्षा देने के बारे में सोचा। रुक्मिणी ने बिना कोचिंग के पहली बार में ही यह टेस्ट क्लीयर कर लिया। वह दिन में ६ से ७ घंटे पढ़ती थी।

एक इंटरव्यू के दौरान रुक्मिणी ने बताया कि वह छठी क्लास में फेल हो गई थी। इसके बाद उनके पेरेंट्स ने उन्हें आगे कि पढ़ाई करने के लिए डलहौजी के सेक्रेड हार्ट स्कूल में भेज दिया। मां-बाप से दूर बोर्डिंग स्कूल के दबाव को झेलना उनके लिए मुश्किल हो गया था। पढ़ाई में मन नहीं लग रहा था। क्लास में फेल होने के बाद किसी के सामने जाने की हिम्मत नहीं होती थी। यह सोच कर शर्म आने लगी थी कि दूसरे लोग मेरे बारे में क्या सोचेंगे। इसी डर के मारे धीरे-धीरे डिप्रेशन का शिकार होने लगीं। मगर बाद में मन में ख्याल आया की इस परेशानी से खुद ही बाहर निकलना होगा।

जिंदगी की दोबारा अच्छी शुरुआत करने के लिए उन्होंने फिर से मेहनत करने का फैसला किया। रुक्मिणी का कहना है, 'मैं सबको यह दिखाना चाहती थी कि अगर मुझे अवसर दिया गया तो निश्चित रूप से कुछ न कुछ कर के दिखाऊंगी'। जब मुझे सफलता मिली तो लोगों के व्यवहार में बहुत परिवर्तन देखने को मिला।

उन्होंने यूपीएससी की तैयारी कर रहे युवाओं को संदेश भी दिया है। 'असफलता खराब नहीं है, लेकिन यह हम सब पर निर्भर करता है कि उससे सबक लेकर आगे बढ़ना है या परेशान होना। यदि आप कड़ी मेहनत के इच्छुक हैं तो हर मुसीबत को दूर कर सकते हैं'।

❑यज्ञदत्त आर्य रोहतक

अपनी संस्कृति ही सर्वश्रेष्ठ है।

❏डॉ॰ विजय कुमार सिंघल, सम्पादक 'जय-विजय'

हमारे पूर्वज बहुत दूरदर्शी थे, जिन्होंने स्वस्थ, सुखी रहने के सूत्र दैनन्दिन जीवन में सम्मिलित किये थे

इस समय जब सारा संसार कोरोना वायरस जैसी भयावह समस्या से जूझ रहा है, तो सभी यह अनुभव कर रहे हैं कि पाश्चात्य जीवन शैली और संस्कृति के बजाय हमारी प्राचीन हिन्दू जीवन शैली और संस्कृति ही स्वस्थ और सुखी रहने का सर्वश्रेष्ठ उपाय है। इसके कई कारण हैं जिनकी हम संक्षेप में यहाँ चर्चा करेंगे।

१- अभिवादन करने की हमारी पद्धति 'नमस्ते'। इस समय सारे संसार द्वारा अपनायी जा रही है। इसमें दोनों हाथ जोड़कर और हृदय के सामने रखकर कुछ सिर झुकाकर प्रणाम किया जाता है। इससे दूर से ही और एक साथ ही हजारों व्यक्तियों का अभिवादन किया जा सकता है। दोनों हाथ सामने रहने से किसी प्रकार के छल की कोई संभावना नहीं है। सिर झुकाने से विनम्रता का भाव आता है। हमारी संस्कृति में बड़ों का अभिवादन भी हाथ मिलाकर नहीं बल्कि पैर छूकर किया जाता है। विशेष अवसरों पर गले भी लगाया जा सकता है, परन्तु यह आवश्यक नहीं है।

२- अपने निवास और विशेष रूप से रसोई घर में जूते-चप्पल उतारकर घुसना भी हमारी संस्कृति का अंग है। इससे बाहर के वातावरण के हानि-कारक तत्व हमारे घर में प्रवेश नहीं करते और भोजन शुद्ध बना रहता है। आजकल इस नियम में शिथिलता आ जाने के कारण बहुत हानि हो रही है।

३- हाथ, पैर, मुँह धोकर भोजन करना भी हमारी प्राचीन परम्परा रही है। इससे हमारे पूर्वजों की दूरदर्शिता की कल्पना की जा सकती है। हाथ-पैर-मुँह आदि धोने से शरीर की गर्मी शान्त होती है और व्यक्ति आनन्दपूर्वक भोजन करने के लिए तैयार हो जाता है। इसके अनेक लाभ होते हैं।

४- शाकाहार हमारी संस्कृति का बहुत महत्वपूर्ण अंग रहा है। मुख्य रूप से पेड़ों के फलों का ही भोजन हमारे पूर्वज किया करते थे, जो प्राकृतिक रूप से प्रचुर मात्रा में उत्पन्न होते थे। बाद में अन्न भी उगाया जाता था और उससे भोजन बनाया जाता था। इसी कारण पेड़-पौधों-वनस्पतियों का संरक्षण करना हमारे धर्म का अंग बनाया गया। हमारी संस्कृति में कभी माँसाहार का प्रचलन नहीं रहा। हमेशा पशुओं के पालन और उनके दुग्ध आदि के सेवन पर बल दिया जाता था। गोहत्यारों को मृत्युदंड भी दिया जाता था। पशुओं पर दया करने का पाठ हमें बचपन में ही सिखा दिया जाता है। हर घर में पहली रोटी गाय की और अन्तिम कुत्ते की अवश्य बनायी जाती है। हमारी संस्कृति में चींटी से लेकर हाथी तक के कल्याण की कामना और व्यवस्था की गयी है।

५- पृथ्वी को माता मानना हमारी संस्कृति की विशेषता है। पृथ्वी हमें सब कुछ देती है, माता की तरह हमारा पालन-पोषण करती है। इसलिए हम उसके शोषण में नहीं, बल्कि दोहन में ही विश्वास करते हैं। खेती भी इस प्रकार होती थी कि पृथ्वी की उर्वरा शक्ति हमेशा बनी रहे। उसमें हानिकारक खादों का नाम भी नहीं था, बल्कि गाय के गोबर को खेतों में डाला जाता था। ब्रह्मांड में सन्तुलन बनाये रखने का प्रयास करना हमारी संस्कृति की ही विशेषता है।

६- हमारी संस्कृति में शवों का दाह संस्कार करना अनिवार्य होता था। इससे शरीर के सभी रोग और उनके कीटाणु आदि वहीं समाप्त हो जाते थे। उनकी कब्र आदि के लिए किसी स्थान की भी आवश्यकता नहीं होती थी, केवल कुछ लकड़ी खर्च होती थी, जो हर जगह प्रचुर मात्रा में उपलब्ध थी। आज इसका महत्त्व संसार में सभी स्वीकार कर रहे हैं।

७- हमारी संस्कृति में दैनिक हवन पर बहुत जोर दिया जाता था। इसके द्वारा वातावरण की शुद्धि करना और रोगों से दूर रहना ही मुख्य उद्देश्य था। आस्तिकता का निर्माण होना भी इसका एक अन्य उद्देश्य था। आजकल इसका उपहास किया जाता है, लेकिन इसकी महत्ता समय-समय पर सामने आ ही जाती है, चाहे वह खतरनाक गैसों के रिसाव के समय हो या कोरोना जैसे वायरस के समय।

इन सब उदाहरणों से पता चलता है कि हमारे पूर्वज बहुत दूरदर्शी और महान् थे, जिन्होंने स्वस्थ और सुखी रहने के ये सूत्र दैनन्दिन जीवन में सम्मिलित किये थे और जिनका पालन करना सभी के लिए अनिवार्य होता था। जो इनका पालन करते थे उनको आर्य कहा जाता था और जो इनका पालन नहीं करते थे उनको अनार्य अर्थात् राक्षस जैसे नामों से पुकारा जाता था। संसार को पुनः इस संस्कृति को पूर्ण रूप से अपनाना चाहिए। हमारे पूर्वजों ने जो नारा दिया था- 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' उसका भी उद्देश्य यही था। उनके स्वप्न को साकार करने का दायित्त्व हम सबका है।

आस्तिक-नास्तिक की नोंक झौंक

❒सहदेव समर्पित

फेसबुक पर दो विचारधाराओं के मध्य हुआ यह अत्यंत रोचक संवाद वास्तविक है। इसमें केवल नाम काल्पनिक हैं। वह भी इसलिये कि पूर्व अनुमति के बिना उनके नाम देना नैतिक पत्रकारिता के विरुद्ध है। मैं इन महानुभावों का बहुत धन्यवादी हूँ कि उन्होंने बहुत संयम से संवाद किया, अन्यथा तो इस प्रकार के लोग बौद्धिक कदाचार के महारथी होते हैं। या तो कापी पेस्ट पर पेस्ट-- या फिर निरुत्तर होकर गाली गलौच--। आप भी इस रोचक संवाद का लाभ उठाईये।

मुख्य पोस्ट : विकास पंवार

'आप लाख ईश्वर, अल्लाह, गॉड, खुदा, देवी-देवता, मंदिर-मस्जिद-चर्च के खिलाफ लिख लो; जिस दिन कोरोना का इलाज वैज्ञानिक ढूंढ लेंगे, सारा श्रेय इन फालतू के भगवान् को ही जाएगा। मानो या ना मानो?

सहदेव : विज्ञान और भगवान एक दूसरे के विरोधी नहीं हैं। वैज्ञानिक ईश्वर के नियमों के आधार पर ही कार्य करता है। आज तक एक भी वैज्ञानिक ने ईश्वर, अल्लाह के नियम को न तोड़ा है, न तोड़ सकता है। और न ही किसी वैज्ञानिक ने ईश्वर के अस्तित्त्व से मना किया है।

वास्तव में वैज्ञानिक सबसे बड़े आस्तिक हैं। वे ईश्वर के नियमों को मानते हैं और अपनी लैब में परीक्षा करके उनकी पुष्टि करते हैं।

और ये दास कप्टल के गुलाम। खुद उससे एक कदम भी आगे बढ़कर सोचना भी नहीं चाहते। उस व्यक्ति ने उस देश में प्रचलित रीलिजन के शोषण का विरोध किया और मनुष्य की समानता का दर्शन प्रस्तुत किया। वे उस उद्देश्य को भूलकर भगवान का विश्लेषण करने लगे। जो कि इनके बस का टॉपिक ही नहीं है, और विज्ञान की आड़ लेने लगे, जिसकी इनमें से कोई ठीक से परिभाषा भी नहीं जानते।

पेले जाओ ज्ञान। भारत है।

शुकरिया करो खुदा का (कुदरत का!!) कि पाकिस्तान या चीन में पैदा नहीं हुये।

अहमद : धर्म किसी गोड, किसी भगवान, किसी खुदा ने नहीं बनाये। ये हमारे पूर्वजों ने जीवन जीने के लिए और सभी वस्तुओं की तरह बनाये, जैसे- कार, कश्ती, जहाज।

प्राकृतिक वस्तु एक जैसी होती है। सबके लिए होती है। जैसे- हवा, पानी, धूप।

सहदेव (अहमद को) आप तो पहले ही कह चुके हैं भाई, कि मैं इतना ही जानता हूँ।

(पूर्व टिप्पणी : भगवान को इंसान ने बनाया बस इतना जानते हैं। चाहे वो देखा जाने वाला हो चाहे देखा न जाने वाला।)

आपके पास कोई प्रमाण है क्या? या कोई तर्क? कि धर्म इंसान ने बनाया।

और धर्म बताईये किसे कहते हैं आप?

विकास पंवार (सहदेव को) : आपने तो सारा ही गुड़ गोबर कर दिया भाई! जिन्होंने ईश्वर के बनाए झूठे नियम को चैलेंज दिया, उनको ईश्वर के नियम के साथ जोड़ दिया! भाई साहब, ईश्वर के नियम और प्रकृति के नियम- जो विज्ञान ने खोज निकाले- एक दूसरे के विरोधी हैं।

सहदेव (अहमद को) : आपकी अन्तिम दो पंक्तियों पर अगर गंभीरता से विचार कर लिया जाए तो आपकी और हमारी बातों में पूर्ण सहमति/एकमति है।

(प्राकृतिक वस्तु एक जैसी होती है, सब के लिए होती है। जैसे- हवा, पानी, धूप)

सहदेव (विकास पंवार को) एक भी प्रमाण दे दीजिये। आज ही नास्तिक बन जाऊँगा-- कि विज्ञान के नियम ईश्वर के नियमों के विरोधी हैं।

विकास (सहदेव को) आप ईश्वर का कोई एक नियम बताईए, फिर मै आपको बताऊँगा।

सहदेव (विकास को) गति का नियम, गुरुत्वाकर्षण का नियम, संयोग-विभाग का नियम, जन्म-मृत्यु का नियम, आँख द्वारा देखने का नियम, कान द्वारा सुनने का नियम आदि। जितने भी प्रकृति के नियम हैं, वे सब ईश्वर के बनाए हुए हैं। प्रकृति ज्ञान रहित होने के कारण न तो स्वयं नियम बना सकती है और न स्वयं उन पर चल सकती है।

विकास (सहदेव को) ये सब प्राकृतिक नियम हैं। किसी धार्मिक पुस्तक का लिंक दो, जिसमें ये नियम लिखे गए हैं। पृथ्वी चपटी नहीं, गोल है-- यह बात तो धार्मिक लोग अब तक भी मानने को तैयार नहीं। पृथ्वी अपनी धुरी पर

और सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाती है– ये भी किसी धार्मिक पुस्तकों में लिखा दिखाओ।

अहमद : धर्म हर देश, हर क्षेत्र में बदल जाता है। हर धर्म की अपनी भाषा है। मुसलमानों की अरबी है और हिंदुओं की संस्कृत। यहूदियों की हिब्रू, ईसाईयों की अंग्रेजी। इसी बात से साबित हो जाता है कि धर्म मनुष्य की खोज है और ईश्वर भी उसी की परिकल्पना है।

किसी धर्म में तर्क की कोई गुंजाइश नहीं है। जैसा है, जहाँ है– आंख बंद कर के मान लो। यदि तर्क–वितर्क किया तो सूली तैयार है।

सहदेव (विकास को) : आप मुर्गी को बकरी कह रहे हैं। (मुर्गी का नाम बकरी रखना और जब मुर्गी अण्डा दे तो कहना कि मेरी बकरी ने अण्डा दिया है।)

पृथ्वी का तो नाम ही भूगोल है–– वैदिक ज्योतिष शास्त्र में। **आयं गौ पृश्निरक्रमीत्।**। वेद में लिखा है– पृथिवी दो तरह से घूमती है।

मजहब वालों और रीलिजन वालों की किताबों में धरती को चपटी (लपेटी जायेगी) लिखा है। हिम्मत है तो उनका खुलकर नाम लो। यहाँ कभी गैलिलियो को प्रताड़ित नहीं किया गया, बल्कि अगस्त्य, वराहमिहिर और आर्यभट्ट के रूप में उनका सम्मान किया गया।

यहाँ चिकित्सा विज्ञान का पूरा विकास हुआ। चरक, सुश्रुत, अश्वनीकुमार, धन्वन्तरी आदि वैद्यक का हर चिकित्सा क्षेत्र में आज भी सम्मान है। जो इस बात का प्रमाण है कि आर्य सनातन धर्म में ईश्वर से प्रार्थना अपने कार्य में सहायता के लिए की जाती है। अपनी समस्याओं के समाधान के लिये मनुष्य को उसने बुद्धि दी है। यहाँ ऐसा नहीं होता कि खुद पार्किन्सन रोग से पीडित पोप दूसरों के कैंसर तक को हाथ लगाकर ठीक कर देते हैं। आप मत, मजहबों, रिलीजन के प्रभाव में आकर उनकी अनर्गल बातों को मानने से इन्कार करते हैं, इसका अर्थ यह है कि आप विवेकशील और वैज्ञानिक बुद्धि वाले व्यक्ति हैं। और इसीलिये मैं आपसे प्रभावित हूँ। लेकिन मेरा मतभेद आपसे यह है कि आप धर्म और मजहब को एक समझते हैं।

लोगों के काल्पनिक ईश्वर को और असल ईश्वर को (जिसे आप चेतना कहते हैं) एक समझते हैं। मेरी केवल एक ही प्रार्थना है कि आप इस पक्ष का अध्ययन करें। लाकडाउन के बाद हम और आप रहे तो मैं आपको संबंधित साहित्य भेजूँगा।

यद्यपि आपकी धारणा को बदलना मेरा लक्ष्य नहीं है, तथापि आपके प्रति मेरे सम्मान में कोई कमी नहीं आयेगी।

सहदेव (अहमद को) : भाई जान, ऐसा नहीं है। वैदिक धर्म में मनु का कथन है– यस्तर्केणानुसंधते स धर्मः।। जिसका अनुसंधान तर्क से किया जाता है, वह धर्म है। गीता में कहा है– परिप्रश्नेन सेवया।। वेद में कहा है– ज्ञान, कर्म उपासना। यह इतिहास सिद्ध है कि प्राचीन यहूदियों, ईसाईयत और इस्लाम से पहले सब मनुष्यों का एक ही धर्म था। कणाद ने कहा– जिससे इस लोक में अभ्युदय और परलोक में यानि मृत्यु के बाद निःश्रेयस् हो, वह धर्म है। वास्तव में जो सब काल में, सब देशों में सब को एक समान मानने योग्य है, वही धर्म है। जैसे–सच बोलना। जैसे–क्रोध न करना। देश भेद के कारण रीति रिवाजों मे भेद हो सकते हैं, धर्म के निर्देशक सिद्धांतों में भेद नहीं होते। ईश्वर ने यही एक धर्म बताया है। मनुष्य ने स्वार्थवश रीति रिवाजों को धर्म का नाम देकर भेद पैदा किये हैं और अपनी–अपनी पुस्तकों को ईश्वर की भेजी हुई कहकर भेदभाव पैदा किया। आप लोग उसी की बात कर रहे हैं, लेकिन सच्चे ईश्वर के स्वरूप को न जानने के कारण सब कुछ मिक्स अप कर रहे हैं। यह कुत्ते के कसूर पर गधे को पीटने वाली बात है। आप बुद्धिमान लोगों को धर्म और ईश्वर के स्वरूप को जानकर मानवता का मार्गदर्शन करना चाहिए।

अहमद (सहदेव को) : बात अच्छाई–बुराई की नहीं हो रही–– आप को सेब पसंद है, मुझे नहीं। जो धार्मिक पुस्तकें हैं उन में मानवता के लिए संदेश से इंकार नहीं है। परंतु ये सब मानव–रचित है। ईश्वर रचित नहीं है।

सहदेव (अहमद को) : आप पहले कुछ और ही कह रहे थे!

सहदेव (अहमद को) : चलो यही सही, धार्मिक पुस्तकों में मानवता का संदेश है तो धर्म का विरोध क्यों? धर्म के नाम पर पाखण्ड का विरोध करिये। जो मजहब में अक्ल के दख्ल का प्रतिबंध है, उसका विरोध करिये। हम भी आपके साथ हैं।

जसवंत सरोया (सहदेव को) जी, इन लोगों का क्या धर्म था क्या आप बता पाएंगे? (चित्र अगले पृष्ठ पर।)

सहदेव (जसवंत को) : क्यों पंगा ले रहे हो जसवंत भाई!

डार्विन की थ्योरी बकवास है। ना इस पर सारे वैज्ञानिक सहमत हैं। यह चित्र (अगले पृष्ठ पर) खुद बिना अकल का प्रयोग किये बनाया गया है। एक तरफ इनको पूर्वज बता रहा है और नीचे सबको इंसान की औलाद बता रहा है।

और सुनिये, इंसान शुरू से ही इंसान था। बंदर शुरू से ही बंदर था। और सभी मनुष्यों का एक ही धर्म था। और धर्म तो धर्म ही होता है। उसका कोई विशेषण नहीं

होता। जिसको आप इंसानियत कहते हो, वास्तव में लगभग वैसा ही होता है धर्म। ये जो मत–मजहबों का नाम धर्म रखा गया है, यह धर्म को बदनाम करने वाले तत्त्वों के द्वारा रखा गया है।

भाई जी, कोई भी मुस्लिम इस्लाम को धर्म नहीं कहता। ईमान कहेगा या मजहब। क्योंकि धर्म संस्कृत भाषा का पारिभाषिक शब्द है। हमारी तो अनपढ माताएँ, दादियाँ तक जानती हैं कि धर्म क्या होता है। जब वे भूखे को भोजन खिलाने के लिए कहती हैं कि धर्म होगा।

भाई साहब, ये धर्म हैं ही नहीं जिनके आपने ऑप्शन दिये हैं। जैसे पानी का धर्म शीतलता, जैसे अग्नि का धर्म उष्णता, ऐसे ही मनुष्य का धर्म मनुष्यता। वैदिक थ्यूरी यही है। कोई कहता है मुस्लिम बनो, कोई कहता है ईसाई बनो। वेद कहता है– मनुष्य बनो।

अगर आपको ये बातें समझ आ जाएँ तो ही बहस को आगे बढ़ाना, नहीं तो अपना और मेरा समय खराब न करें।

सहदेव (जसवंत को) : और आप तो मेरे पास के ही हो, लाकडाऊन के बाद मिलकर बात कर लेंगे। नमस्ते।

जनेन्द्र कुमार (सहदेव को) जी! सुनते हैं कि, ब्राह्मण ब्रम्हा के मुख से निकले हैं, किन्तु दिखता है साफ कि, ब्रम्ह ही ब्राम्हण के श्री मुख से निकले हैं। जमाने को बेवकूफ बना खुद धरती के ब्रम्हा बनने को।

सहदेव (जनेन्द्र को) : सुनी सुनाई बातों से भ्रमित हो रहे हैं आप। ऐसा कहीं नहीं लिखा। और न कोई मनुष्य किसी के मुंह से निकल सकता है। पुरुष सूक्त में यह समाज की संकल्पना है। और ब्राह्मण कोई जाति नहीं है। आजकल जिनको बुद्धिजीवी कहते हैं, वही अर्थ ब्राह्मण का है। तो वे समाज के मुख के समान हैं।

खुद के और मिशनरीज के बनाए नैरेटिव में खुद उलझ रहे हैं। न जानने का प्रयास करते। जिज्ञासा के बिना ज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता।

भाई जी, इतना आसान नहीं है।

साम्यवाद को जानना है तो किसी पढ़े लिखे साम्यवादी से पूछो।
इकोनोमी को जानना है तो किसी इकोनोमिस्ट से पूछो।
किसी बिमारी को जानना है तो किसी डाक्टर से पूछो।
वेद को जानना है तो किसी वेद के जानकार से पूछो।
सारा ज्ञान खुद ही धकेलोगे तो कैसे चलेगा!

जनेन्द्र कुमार (सहदेव को) : जी, बाकी तकनीकी ज्ञान तो अर्जित करना पडता है। किंतु वेदज्ञता तो जन्म सिद्ध अधिकार है। रही बात ज्ञान की, तो उस पर तो अनादिकाल से जन्मत: उन्हीं का अधिकार है। आप का तर्क– कि– पढ़े लिखे ज्ञानी को ब्राम्हण कहते हैं, वैसे ही है, कि, एक ओर ब्राम्हण रचित ईश्वर की मर्जी के बिना पत्ता भी नहीं हिलता है, तो दूसरी और हमें कर्म फल से ही भुगतान मिलता है। जो सुर में सुर मिलाए वही ज्ञान, जो प्रतितर्क कर दे वही अज्ञानी अधम! सारा हक तो सुरक्षित है समाज के शिखर पुरुषों के पास। हमारे लिए तो उनका अनुसरण ही कल्याणकारी है। किंतु हम हैं कि खुद को बर्बाद करने को ही समर्पित हैं।

सहदेव (जनेन्द्र को) : ज्ञान पर किसी का जन्मसिद्ध अधिकार नहीं है। यह आपकी गलत धारणा है।

यजुर्वेद में कहा है–

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्य:।
ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चर्याय च स्वाय चारणाय।।

वेद सबके लिए है। एकाधिकार की यह धारणा इसलिए बनी– क्योंकि वेद के जानकार को ब्राह्मण कहते हैं। अब डाक्टर ही यदि चिकित्सा करता है तो क्या आप उसे एकाधिकार कहेंगे? क्या उसे मास्टर के या इंजिनियर के अधिकारों का हनन कहेंगे?

तकनीकी ही क्यों? हर प्रकार का ज्ञान अर्जित करना पड़ता है। और अर्जित कर लेने वाला ही उसके प्रयोग का अधिकारी होता है।

पढ़े लिखे बुद्धजीवी को ब्राह्मण कहता हूँ, यह तर्क नहीं, भाषा विज्ञान का सिद्धान्त है। आप तर्क और सिद्धान्त का अन्तर भी नहीं समझते? अब यह तो आप को संस्कृत के कोष से पता चलेगा कि ब्रह्म का अर्थ– बड़ा, विद्या भी होते हैं। अब कोई भी संस्कृत नहीं जानने वाला संस्कृत के अर्थ करने लगेगा तो यही होगा ना! अब मैं भाषा का विद्यार्थी होकर कोरोना का ईलाज करने लगूँ तो आप सब

बुद्धिमान मुझे रोकेंगे ना! क्योंकि मैं उसका अधिकारी नहीं हूँ। और यह अधिकार जन्मजात नहीं है। न कभी रहा। हाँ, विदेशी आक्रमण काल में कुछ रहा हो, तो उसका औचित्य/अनौचित्य इतिहास के परिप्रेक्ष्य में समझना पड़ेगा। और हर ज्ञान का दुरुपयोग करने वाले भी होते हैं। यदि कोई जन्मजात होने के अधिकार का पक्षधर है तो मैं उसका समर्थन नहीं करता। और विस्तृत अध्ययन के आधार पर इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूँ कि वैदिक प्रामाणिक आधिकारिक ग्रंथों में जन्मजात अधिकार का विधान नहीं है।

यह भी वैदिक विधान नहीं है कि ईश्वर की मरजी के बिना पत्ता नहीं हिलता। जीव अपनी मर्जी से अपनी सामर्थ्य के अनुसार कर्म करने में स्वतंत्र है।

सहदेव (जनेन्द्र को) : आप नास्तिक हैं, मुझे कोई आपत्ति नहीं है, और न ही इससे मेरा आपसे प्रेम कम होगा। लेकिन जिस विषय में आपकी धारणायें यथार्थ के विरुद्ध हैं। उनके बारे में दूसरे पक्ष को जानने का प्रयास कीजिये, यह मात्र सुझाव है।

आप यदि कर्म में विश्वास रखते हैं तो सच में आप सबसे बड़े आस्तिक हैं, क्योंकि ईश्वर की आज्ञा है कि कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेत्। जब तक जीवित रहें कर्म करने की इच्छा करें।

अहमद : क्या जातीय व्यवस्था जन्म से निर्धारित नहीं होती? आज तक क्या संघ का उच्च पद किसी और जाति के व्यक्ति को प्राप्त हुआ? क्या ज्ञान भी जन्मजात होता है?

सहदेव (अहमद से) : नहीं भाई जी, मेरे अजीज! सच तो यह है कि आज प्रचलित जाति व्यवस्था वैदिक विचारधारा के विरुद्ध है। जाति की आधिकारिक परिभाषा है- समान प्रसवात्मिका जातिः।। यानि जिनके जन्म लेने का तरीका एक जैसा है उनकी एक जाति। इस हिसाब से सब मनुष्यों की एक जाति, पक्षियों की अलग जाति।

ज्ञान दो प्रकार का होता है-

१ स्वाभाविक ज्ञान

२ नैमित्तिक ज्ञान

स्वाभाविक ज्ञान जन्मजात होता है। जैसे पशु के बच्चे को भी भूख-प्यास का ज्ञान होता है। तैरने का ज्ञान होता है। बच्चा पैदा होते ही रोता है।

नैमित्तिक ज्ञान जन्मजात नहीं होता। जैसे पढ़ना-लिखना, विज्ञान, इतिहास आदि। यह दूसरों से अर्जित किया जाता है। मनुष्य जो विशेष ज्ञान प्राप्त करता है वह दूसरों से ही प्राप्त करता है। चाहे माता-पिता से, चाहे उस्ताद, टीचर से या समाज से।

किसी जन्मजात बच्चे को यदि मनुष्यों से अलग जंगल में छोड़ दिया जाये तो वह बोलना, चलना कुछ नहीं सीख पायेगा।

मनुष्य ज्ञान का विकास कर सकता है; क्योंकि उसके पास ज्ञान का विकास करने का साधन यानि बुद्धि है। वह ज्ञान को पैदा नहीं कर सकता। इसीलिये संसार का कोई भी वैज्ञानिक अपनी उपलब्धि को 'खोज' कहता है। आविष्कार, इन्वेंशन कहता है। वह उसे अपनी पैदावार नहीं बताता। यह ईश्वर (या प्रकृति) के प्रति उसकी कृतज्ञता है। क्योंकि खोज उसी चीज की होती है जो पहले से विद्यमान हो।

भाई जी, हम इसीलिये ईश्वर, अल्लाह, खुदा को मानते हैं क्योंकि जो संसार का सबसे पहले पैदा होने वाला मनुष्य था उसको नैमित्तिक ज्ञान देने वाला उसके सिवा कोई और न था। अब वेद विद्या के अभाव में यदि ईश्वर को मानने वालों में कुछ दार्शनिक मतभेद हो गये हैं तो इसका दोष ईश्वर को देने की बजाय हम सब मत मतान्तरों के जागरुक लोगों को वे मतभेद और विरोध मिल बैठकर समाप्त करने चाहियें।

और हम दोनों भाईयों के बीच में यह संघ कहाँ से आ गया? (समाप्त)

निष्कर्ष :

१- अधिकांश नास्तिक वैदिक विचारधारा से अपरिचित हैं। वे मत मतान्तरों की सामान्य ऊपरी मान्यताओं से परिचित होते हैं, जिन्हें वे गलत समझते हैं और उनको धर्म समझकर उनका प्रचण्ड विरोध करते हैं।

२- अधिकांश नास्तिक वर्तमान में प्रचलित हिन्दु धर्म में कुरीतियों का ही विरोध करते हैं। अन्य मत मतान्तरों पर आक्षेप करने से या तो वे डरते हैं या उनकी यह धारणा है कि कुरीतियाँ तो केवल हिन्दुओं में ही होती हैं।

३- जब वे मत मतान्तरों के लिये 'धर्म' शब्द का प्रयोग करते हैं तो स्वतः सारे आक्षेप वैदिक धर्म पर ही आ जाते हैं। धर्म शब्द का प्रयोग इसी उद्देश्य से किया जाता है।

४- इनका एक हथियार होता है- भड़कना, गाली गलौच। सामाजिक माध्यमों पर काम करने वाले युवाओं को इनसे धैर्य से बात करनी चाहिए।

५- ये लोग मानवता आदि लुभावने शब्दों का प्रयोग करके शास्त्रों से अनभिज्ञ युवाओं को भ्रमित करने का प्रयास करते हैं, जबकि धर्म के बिना मानवता का कोई अर्थ ही नहीं है। किसी भी प्रकार के भ्रम में आने से बचने के लिए अपने धार्मिक ग्रंथों का नियमित रूप से स्वाध्याय करना चाहिये।

६- किसी को विद्या के प्रति प्रवृत्त कर देना पुण्य कार्य है।

एक समीक्षा

क्या श्रीराम ने बाली का वध छल से किया था!

श्रीराम ने बाली को छल से नहीं, अपितु युद्ध के नियमों के अनुसार ही मारा था। अत: विधर्मियों के आक्षेपों और टीवी शो की रामायण देखने के साथ बाल्मीकीय रामायण का स्वाध्याय करें और भ्रांतियों से बचें।

❒कार्तिक अय्यर एवं श्री अभिलाष आनंद

पाठकगण! सदियों से श्रीराम पर एक कलंक लगाया जाता था कि उन्होंने बाली को छल से मारा था; परंतु वाल्मीकीय रामायण के अनुसार ऐसा सिद्ध नहीं होता। सत्य यह है कि राम और बाली में भी युद्ध हुआ और अंत में बाली पराजित हुआ। इस लेख में हम इसी विषय पर प्रकाश डालेंगे।

१- श्रीराम की परीक्षा :- भगवान् श्रीराम ने अपने बल से बाली को मारा था, छल से नहीं, देखिये- भगवान् श्रीराम के बल की सुग्रीव ने परीक्षा ली थी, तब युद्ध किया था बाली से! सुग्रीव असुर दुंदुभी की 'अस्थिनिचय' और सात ताल वृक्षों को भगवान् श्रीराम को दिखाते हैं और कहते हैं- जो इस अस्थि पिञ्जर को उठाने में समर्थ होगा और जो एक ही बाण से इन वृक्षों को काट दे वही युद्ध में बाली का वध कर सकता है।

तब भगवान् श्रीराम दुंदुभी के अस्थिपञ्जर को पादांगुष्ठ से दश योजन दूर फैंक देते हैं (यह अतिशयोक्ति अलंकार है)। यहाँ स्पष्ट कहा है- 'बालीनं हन्तुं समरे' अर्थात् युद्ध में। (बा० रामायण किष्किन्धा कांड 11/68)

सात साल वृक्षों का भी एक बाण से भेदन कर देते हैं और बाण पुन: उनके पास आजाता है। (कि०12/3-4)

अब यह तो निश्चित हो गया कि श्रीराम के बल की परीक्षा बाली को युद्ध में मारने के लिये हुई, छल से मारने के लिये तो इसकी आवश्यकता ही नहीं थी।

2- बालकांड की अंत:साक्षी : बालकाण्ड में कहा है कि श्रीराम ने बाली को युद्ध में मारकर सुग्रीव को राज्य दिलाया था।

'तत: सुग्रीववचनाद्धत्वा बालिनमाहवे।
सुग्रीवमेव तद्राज्ये राघव: प्रत्यपादयत् !! (बालकांड सर्ग १)

3- श्रीराम और बाली का युद्ध हुआ था:-सुग्रीव की ललकार पर बाली ने पहले सुग्रीव से युद्ध किया- फिर जब सुग्रीव घायल हो गए- तब श्रीराम से युद्ध किया। एक तरफ बाली अपने वानर सैनिकों के साथ श्रीराम से युद्ध कर रहा था, तो दूसरी तरफ श्रीराम की तरफ केवल सुग्रीव थे जो घायल हो चुके थे। वाली वध के बाद जब बाली पत्नी तारा बाली के सैनिकों को डाँटती है तब वानर कहते हैं-

'आपका पुत्र अंगद जीवित है, उसी की रक्षा कीजिये। यमराज ने राम के रूप में आकर बाली का वध किया। उन्होंने बाली द्वारा फैंके हुए वृक्ष और पत्थर विदीर्ण किये और बाली को मारा है। उसके मरने के बाद समस्त वानर-सेना भाग गयी।' (किष्किन्धा कांड १९/११-१३)

इस वर्णन से स्पष्ट होता है बाली ने भगवान् श्रीराम के ऊपर पत्थर और पेड़ों से आक्रमण किये थे, जो श्रीराम ने बाणों से काटकर खण्डित कर दिए। अब यदि छल से मारा होता तो बाली श्रीराम के ऊपर वृक्षों और पत्थरों से आक्रमण कैसे करता? बाली के मरने के बाद उसके सैनिक भी भाग गए; इससे सिद्ध होता है बाली अकेला नहीं, सैनिकों सहित युद्ध कर रहा था।

हनुमान् जी दो जगह बाली वध का वर्णन करते हैं और दोनों जगह श्रीराम के हाथों युद्ध में बाली मारा गया। (१) सीताजी को लंका में बताते हैं और (२) दूसरी बार भरत जी को अयोध्या लौटने पर- 'बालिनं समरे हत्वा महाकायं महाबलम् ' (यु० कां० १२६/६८)

इससे यह सिद्ध है कि श्रीराम ने बाली का वध धोखे से नहीं, अपितु युद्ध करके किया था।

4:- युद्ध का वर्णन थोड़ा विस्तार से:- सुग्रीव और बाली के युद्ध की योजना श्रीराम ने इसलिये बनाई थी ताकि राम जी बाली के दांव पेंच भली-भांति जान लें और सुग्रीव बाली को थका दे। जब पहली बार बाली सुग्रीव का युद्ध हुआ था, तब बाली से पिटकर सुग्रीव इधर उधर देखने लगे थे- कि राम सहायता क्यों नहीं कर रहे। रामजी उन दोनों के जुड़वां होने से भ्रमित हो रहे थे। (4/16/31) इसका यही अर्थ है कि सुग्रीव के हारने के बाद राम से उसका युद्ध होगा, यह उनमें तय हुआ था। फिर रामजी ने सुग्रीव को मनाकर दुबारा भेजा। दुबारा युद्ध शुरु हुआ। दोनों भाई लड़कर लहूलुहान हो गये। उसके बाद, श्रीराम ने अपने

धनुष पर डोरा चढ़ाया और युद्ध के लिये सज्ज हो गये। उनका रौद्ररूप देखकर पशु पक्षी डर कर भागने लगे। (किष्किन्धा कांड १९/११-१३) ध्यातव्य है कि यदि पशु-पक्षी सब भाग रहे थे तो बाली को भी राम की उपस्थिति के बारे में पता चला ही होगा। उसने फिर राम पर पेड़ और पत्थर से वार किये होंगे। परंतु कदाचित् किसी ने मूलपाठ में से वे श्लोक निकाल दिये हैं। परंतु 19वें सर्ग में वे श्लोक आये हैं जिनसे उनके युद्ध का पता चलता है। यही नहीं, राम का रौद्र रूप देखकर वानर सेना भागी, यह भी आया है। यानि पक्का युद्ध हुआ था। वरना सेना कहां से आ गई यदि कपट हो रहा था? अंत में रामजी ने उसको बाण से मार डाला। (कि०16/32-33)

5:- बाली के आक्षेपः- धराशायी होकर बाली श्रीराम पर दोषारोपण करता है-'हे राम! मैं जब तुमसे युद्ध करने नहीं आया था, मैं तो सुग्रीव से लड़ रहा था, तो तुमने मुझे क्यों मारा? मैं तुमको कुलीन समझता था, पर तुम अधर्मी और पापी हो, धोखा देने के लिये धर्म का चोला पहनते हो। राजाओं में पृथ्वी, सोना आदि के लिये लड़ाई होती है, आपकी मुझसे क्या दुश्मनी थी? जिस रावण ने आपकी पत्नी का हरण किया है, उसे पकड़कर आपके सामने ले आता। (4/17/5०)। यदि आप मेरे सामने आकर मुझे मौका देकर युद्ध करते तो यमलोक के दर्शन करते। मैं मरकर स्वर्ग जाऊंगा, मगर मुझे यही दु:ख है कि आपने मुझे रणभूमि में अयुक्त अधर्मपूर्वक मारा। (किष्किं० 17/47, 52)

यहां पर बाली एक बार भी नहीं कहता कि हे राम! तुमने मुझे छल से मारा। यहां साफ दिख रहा है कि रामजी सुग्रीव की जगह आ गये, बाली उनसे लड़ना नहीं चाहता था पर फिर भी श्रीराम ने उसे लड़कर मार दिया। हां, श्रीराम ने उसको उसका पराक्रम प्रकट करने नहीं दिया, उन्होंने उस पर तब वार किया जब वह नीचे पड़े सुग्रीव पर वार करने वाला होगा। यह ऐसा ही है जैसे निहत्थे सात्यकि पर वार करते भूरिश्रवा के हाथ को तलवार सहित अर्जुन ने काट दिया था। यहां ध्यान देने लायक बात है कि बाली बहुत से पापों को गिनाता है, जैसे- ब्रह्मघात, नास्तिकता, गुरुपत्नी से व्यभिचार आदि- पर वो 'छल से मारना' इस पाप को नहीं गिनाता। इसका यही अर्थ है कि वह श्रीराम को छल से मारने वाला नहीं मानता। (देखें किष्किं० 17/33-36) सीता हरण और रावण का जिक्र करना सिद्ध करता है कि वह राम के बारे में सब कुछ जानता था। साथ ही युद्ध में जाने से पहले उसकी पत्नी तारा भी उसे राम सुग्रीव की दोस्ती के बारे में बताती है।

6:- श्रीराम का बाली को प्रत्युत्तरः- फिर राम उसे उत्तर देते हैं-हे बाली! यह समस्त पृथ्वी इक्ष्वाकुवंशियों के हाथ में हैं। इस समय भरत इस पृथ्वी के सम्राट् हैं। हमें और अन्य राजाओं को अधिकार है कि हम अधर्मियों को दंड दें, फिर मैं तुम जैसे पापी को कैसे छोड़ सकता हूं? तुम अपने राजधर्म में कभी स्थिर नहीं रहे। सत्पुरुषों ने तुम्हारी बहुत निंदा की है। तुम अपने भाई के जीते जी अपनी पुत्रवधू के समान छोटे भाई की पत्नी से कुकर्म करते हो, इसलिए तुमको दंड दिया गया है। मैंने तुमको धर्मयुत् होकर ही मारा है। हम लोग राजा और धर्मशास्त्र के आधीन हैं।' (किष्किं० 18/६,११,१२,१८-२१,२५)

बाली स्वीकार करता है कि उसने पाप किया। वह कहता है-'हे राम! निश्चित ही आप जो कह रहे हैं, वह सत्य है, इसमें संशय नहीं है। मैं अपना अपराध स्वीकार करता हूं। मैंने प्रमादवश आपको जो दुर्वचन कहे, आप उसका अपराध न मानें। आपके बुद्धि और कार्य दोनों धर्मयुक्त और निर्मल हैं।' (कि० 17/44-47) इस प्रकार बाली सुग्रीव को राजगद्दी व अपना पुत्र अंगद सौंप कर चल बसा। ध्यान दें कि बाली श्रीराम को 'इंद्रसमान शत्रु को युद्ध में हराने वाले' कहता है ('महेंद्रोपम भीमविक्रमः' 'प्रसादितस्त्वं क्षम मे नरेश्वर'(66) क्या वह छल करने वाले को ऐसा कह सकता था? बाली के धराशायी होने पर तारा बाली के पास आकर फूट फूटकर रोने लगी। तारा स्वयं कहती है कि-'जिनका पराक्रम इंद्र के समान था, वे शूरवीर आज दूसरे वीर द्वारा रणभूमि में मार दिये गये।' (कि० 4/19/23) अतः साफ सिद्ध हो गया कि बाली को श्रीराम ने युद्ध में मारा था, न कि छल करके।

7:- पेड़ के पीछे छुपने का रहस्यः- प्राचीन समय में रथ, ढाल व कवच के द्वारा रक्षात्मक युद्ध किया जाता था। आधुनिक युद्धों में भी सैनिक सीमा पर आमने सामने से नहीं लड़ते अपितु सुरक्षित स्थान पर छिपकर ही लड़ते हैं, जिससे शत्रु के सहज शिकार न हो जाएं। इसलिए बाली द्वारा फेंके गए वृक्षों/शिलाओं से सुरक्षित रहने के लिये वृक्ष का सहारा लिया। इस तरह श्रीराम ने कोई छल या धोखा नहीं किया बाली वध में। युद्ध के नियमों के अनुसार ही बाली वध किया गया। परंतु लोगों ने पेड़ों के पीछे छिपने का अर्थ शिकारी की तरह मारना कर दिया।

निष्कर्ष : पाठको! हमने बलपूर्वक स्थापित कर दिया है कि राम ने बाली को छल से नहीं, अपितु युद्ध के नियमों के अनुसार ही मारा था। अतः विधर्मियों के आक्षेपों और टीवी शो की रामायण देखने के साथ बाल्मीकीय रामायण का स्वाध्याय करें और भ्रांतियों से बचें।

।। मर्यादापुरुषोत्तम भगवान् श्रीराम चंद्र की जय।।

जवानो! जवानी ना यूँ ही गँवाना

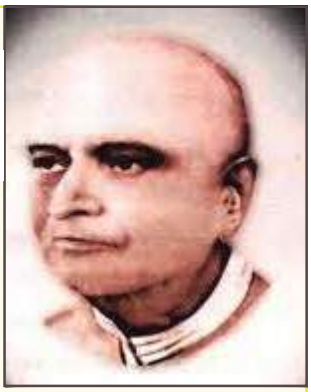

[ब्रह्मचर्य का व्रत धारण करने से मनुष्य ऐश्वर्यशाली बनता है। आज नौजवान ब्रह्मचर्य के व्रत को भूलकर भोगवाद की ओर भाग रहे हैं। ब्रह्मचर्य के अभाव में मनुष्य शारीरिक, मानसिक और आत्मिक उन्नति से वंचित हो रहा है। आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध विद्वान् स्व० पं० बुद्धदेव विद्यालंकार जी (स्वामी समर्पणानन्द जी) का यह लेख 'आर्य गजट' हिन्दी (मासिक) के मार्च 1974 के अंक में प्रकाशित हुआ था। ब्रह्मचर्य की शक्ति को जानने के लिए नौजवानों यह लेख अवश्य पढ़ना चाहिए।]

❒डॉ० विवेक आर्य/ प्रियांशु सेठ

मूर्ख और बुद्धिमान् में बड़ा अन्तर होता है। मूर्ख अच्छी बात को भी बुरा बना लेता है और बुद्धिमान् बुरी चीज को भी अच्छी बना लेता है। काजल का अगर सही प्रयोग किया जाये तो आंखों में डाला हुआ सुन्दरता को चार चांद लगा देता है, मगर गलत ढंग से प्रयोग किया हुआ वही काजल इधर-उधर लग जाये तो अच्छी सूरत को भी भद्दा बना देता है। एक बुद्धिमान् पुरुष ने आग पर चढ़ी हुई देगची को देखा, उसने अनुभव किया कि वह पानी जो पहले चुपचाप था भाप बनकर कितना जबरदस्त बन गया है- जिसने ढक्कन को धकेल कर फेंक दिया है। बुद्धिमान ने इस शक्ति को संभाला और इंजिन तैयार कर लिया। मूर्ख ने पानी और आग को इकट्ठा किया और हुक्का बनाकर गुड़गुड़ करता रहा और अपना समय और स्वास्थ्य खराब करता रहा।

मनुष्य पर भी एक समय आता है जब उसके सामने अपनी शक्ति सम्भालने का अवसर आता है, जवानी मस्तानी बनकर आती है। जब वह चलता है तो कन्धे मारकर चलता है। पूछो तो कहेगा- देखते नहीं, जवानी आ रही है। स्टीम पैदा हो रही है। समझदार ने इसे संभाला और लाखों लोगों को पीछे लगा लिया, लेकिन मूर्ख यह कहता हुआ-

इस दिल के टुकड़े हजार हुए,
कोई यहां गिरा कोई वहां गिरा।।

-अपनी जवानी का नाश कर लेता है।

नौजवानी में ही संभलने का समय होता है, लेकिन आज का नौजवान- कौन-सी ऐसी खराबी है जिसको निमन्त्रण नहीं देता। मैंने एक जानकार नौजवान को, जिसको शराब की लत लग गई थी, कहा कि क्यों अपना नाश कर रहे हो? कहने लगा- पण्डितजी, आपने कभी पी ही नहीं- शेख क्या जाने मय का मजा, पूछो कम्बख्त ने कभी पी है! पी लेते तो ऐसा न कहते। मैंने कहा- पीने से क्या होता है। कहने लगा- सब गम गलत हो जाते हैं। मैंने कहा- और होश? तो कहने लगा कि होश रहता ही नहीं। मैंने कहा कि- इससे बढ़कर और क्या बेवकूफी होगी कि मनुष्य पैसे खर्च कर अपने होश खो दे! अरे मजा तो तब है कि होश कायम हों और फिर नशा चढ़ा रहे।

नाम खुमारी नानका चढ़ी रहे दिन रात।।

(लेकिन उस नानक के पुजारी आज सबसे अधिक शराब पीते हैं।)

अभिमन्यु की लाश पड़ी है, सब रोते हैं। सुभद्रा का बुरा हाल है, कृष्ण आते हैं। कहते हैं कि सुभद्रा क्या कर रही हो? सुभद्रा रो पड़ती है। कहती है कि भाई, तुम मुझे यह कह रहे हो कि क्या कर रही हो? मेरा जवान बेटा छिन गया है। मैं अधीर न होऊं तो क्या करूँ? कृष्ण कहते हैं कि सुभद्रा, तू याद कर। तू क्षत्रिय की पुत्री है! क्षत्रिय की बहिन है!! क्षत्रिय की पत्नी है!!! और उस क्षत्रिय वीर की माता है जो धर्म पर वीरगति को प्राप्त हुआ है। क्षत्रिय का सबसे बड़ा कर्त्तव्य धर्म और न्याय की रक्षा के लिए मर मिटना है। तेरा पुत्र तो अमर हो गया है और तू रो रही है! सुभद्रा को होश आ जाता है। उसका चेहरा दमक उठता है। यह है वह खुमारी! पुत्र सामने मरा पड़ा है और होश कायम रखे जाते हैं। यह हालत तब आती है जब मनुष्य नाम की खुमारी में रंग जाये। ब्रह्मचारी बने।

ब्रह्मचारी का मतलब है- जो ब्रह्म में निवास करे- अपने सत को, वीर्य को संभाल कर रखे। यह वीर्य असली रसायन है। इससे बढ़कर और कोई रसायन नहीं। आज तो लोग असली रसायन को खोकर फिर इंजेक्शन लगवाने लगते हैं। मूर्खता और किसको कहोगे? आज सुन्दरता के लिए सुरखी और लिपस्टिक लगाये जाते हैं, होठों और गालों पर सुरखी और लाली लगायी जाती है। इस रहस्य को भुला दिया है कि असली खूबसूरती और लाली होठों और गालों

पर कैसे आती है! आओ, आपको इसका रहस्य भी बतला दें। होंठ बहुत कोमल हिस्सा होता है। वहां खून की लाली उभरती है। शरीर में खून हो और उसका दौरा ठीक हो तो होठों पर लाली खुद-ब-खुद आ जाती है। शरीर में खून हो इस तरफ ध्यान नहीं दिया जाता। नकली रंग लगाकर बाह्य प्रदर्शन किया जाता है। अच्छा भला आदमी हो, कुछ देर पानी में रहे तो खून का दौरा रुक कर होंठ नीले पड़ जाते हैं। ये खून के करिश्मे हैं! अरे अपने सत को, वीर्य को कायम रख कर तो देखो -कितना आनन्द आता है? गंवाने में तो क्षणिक मजा और फिर पछतावा लगा रहता है, लेकिन इसे कायम रख कर देखो कितना आनन्द आयेगा।

आप कहेंगे पण्डित जी क्यों तरसा रहे हो। इसे कायम रखने के लिए कोई रास्ता तो बताओ। रास्ता सुन लो- आपको ब्रह्मचारी बनना होगा और हमेशा प्रभु की याद रखनी होगी। कहा जाता है कि प्रभुभजन और प्रभु भक्ति तो बुढ़ापे की चीज है। याद रखना, अगर आपने अभी से आदत न बनाई तो बुढ़ापे में कुछ न होगा।

सावन का महीना है। आमों का टोकरा सामने पड़ा है। मनुष्य आम चूस कर गुठलियों को एक थाली में सजा-सजा कर रख रहा है। मैंने पूछा- ये क्यों सजाई जा रही हैं? कहने लगे यह भगवान की भेंट होंगीं। अरे! मीठा रस तो शैतान के लिए और गुठलियां भगवान के लिए! जब शरीर काम का न रहेगा, खाक भगवान की याद करोगे। जवानी बेकार खो दी तो बुढ़ापे में भगवान हाथ न आएगा। एक यह भी सवाल किया जाता है कि प्रभुभजन क्या करें- दिल तो लगता नहीं। लगेगा--। पहले भूख पैदा करो। भोजन और भजन का एक ही कानून है। भोजन तभी अच्छा लगता है जब भूख हो। भूख में सूखे टुकड़े भी मजा देते हैं। परमात्मा के भजन के लिए भी भूख की जरूरत है। गीता ने चार प्रकार के भक्त कहे हैं।

पहला भक्त वह होता है जो दु:खी हो। आप कहेंगे क्या हम दु:खी हो जायें? हां! आप कहोगे- अच्छे उपदेश देने बैठे। माता-पिता जीवित हैं, घर में सब कुछ है, किसी चीज की कमी नहीं, खाने को खूब मिलता है। दु:खी क्यों हों? इस पर भी दु:खी हो जाओ। अपने लिए नहीं, दूसरों के दु:ख को अपना दु:ख समझ लो। अगर तुम्हारे पास कोई भूखा आये तो पहले उसे खिलाओ। कोई दु:खी है तो उसका दु:ख दूर करो। परोपकार करो। सब कुछ रखते हुए सेवा का व्रत धारण करो। सबसे बड़ी ईश्वर भक्ति यही है। किसी के काम आकर तो देखो, कितना आनन्द आता है। दुनिया में जितने दु:ख और झगड़े हैं उनके तीन कारण हैं, इनमें से एक तुम ले लो।

सावन का महीना है। आमों का टोकरा सामने पड़ा है। मनुष्य आम चूस कर गुठलियों को एक थाली में सजा-सजा कर रख रहा है। मैंने पूछा- ये क्यों सजाई जा रही हैं? कहने लगे यह भगवान की भेंट होंगीं। अरे! मीठा रस तो शैतान के लिए और गुठलियां भगवान के लिए! जब शरीर काम का न रहेगा, खाक भगवान की याद करोगे। जवानी बेकार खो दी तो बुढ़ापे में भगवान हाथ न आएगा।

आज शिक्षा के रहस्य को लोगों ने भुला दिया है। हमारे ऋषियों ने इसे खूब समझा था। वे विद्यार्थियों को दुनिया के इन तीन प्रकारों के दु:खों को दूर करने के लिए तैयार करते थे। हमारी वैदिक शिक्षा सच्चे वैश्य, सच्चे क्षत्रिय और सच्चे ब्राह्मण पैदा करने के लिए होती थी, जो तीन प्रकार के दु:ख दूर करने के लिए तैयार किये जाते थे।

पहला दु:ख **अभाव** से पैदा होता है। वैश्य का काम है कि वह वस्तुओं का निर्माण करे और सब लोगों को दे। लेकिन आज का वैश्य तो ब्लैक मार्कीटियों का हो रहा है। वह अपना स्टाक भर लेता है, वस्तुएं गायब हो जाती हैं। न मिलें तो सब दु:खी। अगर वैश्य अपने धर्म पर कायम है तो ब्लैक मार्कीट और अभाव न आयेगा। बांट ठीक हो तो दु:ख न होगा।

दूसरा दु:ख का कारण **अन्याय** है। कुछ गुण्डे उठते हैं और दूसरों की वस्तु छीन कर घर में डाल लेते हैं। क्षत्रिय का काम है ऐसे लोगों से समाज को बचाये। कोई चोर न हो, कोई डाकू न हो। कोई किसी पर अन्याय न करे, सब सुखी हो जायें। इस काम के लिए क्षत्रिय तैयार किये जाते थे जो न्याय को कायम रखने के लिए व्रत लेते थे और अन्याय को मिटाने के लिए जान पर भी खेल जाते थे।

तीसरा दु:ख **अविद्या** की वजह से होता है। अविद्या और अज्ञान को दूर करने का काम ब्राह्मण करता था। सारा संसार सुखी था। इन तीन प्रकार के दुनिया के दु:खों को दूर करने के लिए ही शिक्षा दी जाती थी और यही प्रभुभक्ति है। जो प्रभु को याद रखता है और सेवा और परोपकार की जिन्दगी व्यतीत करता है, वही प्रभु-भक्त है।

ऐसा ब्रह्मचारी ब्रह्म में विचरता है और मृत्युञ्जय हो जाता है। नौजवानो, दुनिया पर और अपने आप पर विजय पानी है तो ब्रह्मचर्य-व्रत को धारण करो। प्रभु-भजन और सेवा का व्रत लो, संसार तुम्हें सर पर उठाएगा।

क्रांति की बलिवेदी पर

देशभक्त बलिदानियों की उपेक्षा

मर्मान्तक कथा

❒राजेशार्य आट्टा, पानीपत (९९९१२९१३१८)

प्रिय पाठकवृंद! यद्यपि लाला लाजपतराय व भाई परमानंद की गिरफ्तारी के समय आर्यसमाज के एक प्रतिनिधि वर्ग ने कुछ कमजोरी (भगतसिंह ने इसे बुद्धिमत्ता माना है) दिखाई और ब्रिटिश सरकार को यह लिख कर दिया कि आर्यसमाज धार्मिक आंदोलन है, इसका राजनीतिक आंदोलन से कोई संबंध नहीं है तथापि भगतसिंह ने अपनी जेल नोटबुक में लिखा है कि अब यदि एक निकाय के रूप में समाज विच्छेद के इस दावे को मान भी लिया जाए तब भी कट्टर हिंदुओं के लिए यह बात गौरतलब होनी ही चाहिए कि भले ही आर्यसमाज में पंजाब की हिंदू आबादी के ५ प्रतिशत से अधिक लोग शामिल नहीं हैं, फिर भी १९०७ से लेकर आज (१९३१) तक हिंदुओं की एक बड़ी आबादी राजद्रोह और दूसरे राजनीतिक अभियोगों के तहत दण्डित होती रही है, वह इस (आर्य) समाज का ही सदस्य रही है।

पर, जब देश का स्वतंत्रता-संग्राम का इतिहास लिखा गया तो उसमें से आर्यसमाज का योगदान गायब हो गया। स्वामी स्वतंत्रानंद जी के लेख से यह संकेत मिलता है कि भारत सरकार ने यह इतिहास तैयार करने के लिए डॉ० सैयद महमूद की अध्यक्षता में जो समिति बनाई थी उसके बहुत से सदस्य ऐसे थे जिनका अंग्रेजी जमाने से कोई संबंध नहीं था। पंजाब की प्रांतीय समिति में पंडित जयचंद विद्यालंकार को लिया गया तो स्वामी स्वतंत्रानंद जी ने लिखा- '१९३० के बाद क्रांति आंदोलन तथा ऋषि दयानंद के अनुयायियों और आर्यसमाजियों के स्वतंत्रता आंदोलन के प्रयत्नों के इतिहास की सामग्री जुटाने का कार्य पंडित जयचंद जी को सौंपा गया है। पंडित जयचंद विद्यालंकार भारत में इतिहास के माने हुए विद्वानों में से एक हैं। धार्मिक सिद्धांतों में आर्यसमाज के साथ उनका मतभेद भी हो सकता है, तो भी राजनीति में वे ऋषि दयानंद के अनुयायी हैं।'

'मैं प्रदेशीय समाजों और प्रत्येक आर्यसमाज से निवेदन करता हूं कि वे इस कार्य में पंडित जयचंद की सहायता करें।' इसके उपरांत भी आर्य वीरों के बलिदान की चर्चा इतिहास में नहीं मिलती। मेरे विचार से इसके यह कारण हो सकते हैं- आर्यसमाजियों का बिखरना, कांग्रेस द्वारा सत्ता हथियाना और शिक्षा संस्थाओं पर कम्युनिस्टों का कब्जा। स्वर्गीय डॉक्टर धर्मवीर जी ने लिखा है- 'स्वतंत्रता के पश्चात् आर्यसमाज का राजनीतिक मंच ने होने के कारण आर्य सभासद् अधिकतर तो कांग्रेस पार्टी से जुड़े थे, अतः उससे जुड़ गए। कुछ साम्यवादी और जनसंघ से जुड़ गए। इन सब राजनीतिक लोगों ने अपने संगठन में आर्य समाज का कार्य नहीं किया, परंतु आर्यसमाज को उन संगठनों से जोड़ने का प्रयास किया। इस प्रकार समाज का कार्य पीछे छूट गया।' (परोपकारी फरवरी २०१६)

जो आर्यसमाजी कांग्रेस के पीछे लगे, वे सत्ताधारी कांग्रेस पर आर्यसमाज का प्रभाव नहीं जमा पाए। परिणामस्वरुप इतिहास में आर्यसमाज की उपेक्षा हो गई। वैसे भी नेहरू सरकार ने तो कांग्रेस के अध्यक्ष रहे नेताजी सुभाषचंद्र बोस का बलिदानी जीवन और इतिहास दोनों ही अंधेरे में दबा दिए थे। सरदार पटेल में यद्यपि योग्यता थी, तथापि वे गांधी जी के आशीर्वाद से ही भारत की राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभा पाए थे। अन्यथा नेहरू जी तो उनकी हर नीति का विरोध करते थे। नेहरू जी ने अपने अधिकारियों और मंत्रियों को निर्देश दिया था कि वे पटेल जी के अंतिम संस्कार में शामिल न हों। (दैनिक जागरण १९/२/२०) पटेल जी की मृत्यु के बाद तो उनके सहयोगियों को नेहरू जी ने चुन-चुन कर शासन और संगठन के कार्यों से सर्वथा अलग कर दिया था। फिर ऐसी सरकार से यह आशा कैसे की जा सकती है थी कि वह आर्य बलिदानियों के बलिदान को इतिहास में स्थान देती।

भारत के राष्ट्रीय आंदोलन में कांग्रेस के कार्यों को महिमामंडित करने के लिए सरकारी स्तर पर एक इतिहास लेखन की योजना बनी। यह कार्य भारत के प्रसिद्ध इतिहासकार डॉ० आर सी (रमेश चंद्र) मजूमदार को दिया गया, जो सर्वथा उचित था। इतिहास लेखन की प्रक्रिया में के बीच में पंडित नेहरू को जानकारी मिली कि इसमें

सुभाष चंद्र बोस को महत्वपूर्ण स्थान दिया जा रहा है तो डॉक्टर मजूमदार से यह योजना छीन ली गई तथा यह कार्य डॉ० ताराचंद को दिया गया जो इलाहाबाद विश्वविद्यालय में प्रोफेसर रहे थे तथा वहां के छात्र उन्हें 'मियां ताराचंद' भी कहते थे। यह था नेहरू सरकार का असली चेहरा। (यह अलग बात है कि डॉक्टर मजूमदार की पुस्तक 'हिस्ट्री ऑफ फ्रीडम मूवमेंट' डॉ० ताराचंद की पुस्तक से पूर्व ही तीन खंडों में प्रकाशित हो गई।) फिर नेहरु जी ने डॉ० ताराचंद को राजदूत बना दिया। बाद में श्रीमती इंदिरा गांधी जी ने भी प्रोफेसर नूरुल हसन को शिक्षा मंत्री बनवा कर सारे तंत्र का वामपंथीकरण कर डाला। सभी शिक्षण संस्थाएं कम्युनिस्टों के कब्जे में आ गई। फिर आर्य समाज के बलिदानियों का इतिहास कैसे लिखा जाता! क्योंकि कम्युनिस्टों ने तो भगतसिंह के वरिष्ठ क्रांतिकारी साथी पंडित राम प्रसाद बिस्मिल का ही इतिहास नहीं लिखा। अपितु अंतिम समय तक भगतसिंह का साथ देने वाले बटुकेश्वर दत्त (बीके दत्त) का भी नहीं लिखा क्योंकि उन्होंने मार्क्सवाद को त्याग दिया था और भगतसिंह का प्रचार इसलिए किया कि वे नास्तिक व लेनिनवाद से कुछ प्रभावित थे। यदि भगतसिंह जीवित रहते और बीके दत्त की तरह वे भी मार्क्सवाद को त्याग देते तो फिर यह कम्युनिस्ट उन्हें भी क्रांतिकारी परिदृश्य से गायब कर देते।

पाञ्चजन्य के शहीद भगतसिंह विशेषांक (२००७ ईस्वी) में श्री देवेंद्र स्वरूप ने लिखा है– 'आजकल सभी कम्युनिस्ट गुट अपने–अपने हिसाब से भगतसिंह के दस्तावेजों के संकलन प्रकाशित कर रहे हैं। जो दस्तावेज उन्हें अपने अनुकूल नहीं लगते, उन्हें दबा दिया जाता है और साम्यवादी 'कीरति' में छपे बहुत से अनाम लेखों व संपादकीयों को भगतसिंह के खाते में डाल दिया जाता है। दस्तावेजों की

जब वे पंक्ति में खड़े हुए पटना के कमिश्नर से मिले और अपना नाम बता कर कहा कि वह एक स्वतंत्रता सेनानी है तो कमिश्नर ने कहा– 'मैं कैसे मान लूं। आपके पास तो स्वतंत्रता सेनानी वाला सर्टिफिकेट भी नहीं है। पहले लाइए, तब मानूंगा।' यह सुनकर दत्त जी को बहुत अफसोस हुआ–– कि भगतसिंह आदि के साथ उसे भी फांसी क्यों नहीं हुई। कम–से–कम देश याद तो करता। जिस स्वतंत्रता के लिए १५ वर्ष जेल में बिता कर शारीरिक यातना के साथ बीमारी भी मोल ली उस स्वतंत्रता में उन्हें स्वतंत्रता सेनानी भी नहीं माना जाता!

बटुकेश्वर दत्त का प्रयाण समय

लुकाछिपी का एक ही उदाहरण यहां देना पर्याप्त होगा। दो मार्क्सवादियों– जगमोहन सिंह और चमन लाल ने भगतसिंह और उनके साथियों के दस्तावेज का पहला संस्करण १९८७ में प्रकाशित किया। उसमें भगत सिंह के साथी बटुकेश्वर दत्त द्वारा १९६० में लिखित 'क्रांतिकारी जीवन दर्शन' शीर्षक लेख भी सम्मिलित किया, किंतु १९९१ में प्रकाशित दूसरे संस्करण में इसे निकाल दिया गया। क्यों? क्योंकि वह लेख उनकी आध्यात्मिक दृष्टि और प्रेरणा को प्रस्तुत करता है।

प्रिय पाठकवृंद! यदि आज भगतसिंह जीवित होते तो क्या अपने साथी का यह अपमान सहन कर पाते! यह सत्य है कि काले पानी की यातना झेलने के बाद (१९३८ ईस्वी) बटुकेश्वर दत्त मार्क्सवाद को त्यागकर आदर्श योगी को क्रांतिकारी के समकक्ष मानने लगे थे। 'दोनों मृत्यु से नहीं डरते'। कालांतर में वे स्वामी विवेकानंद के चिंतन से भी प्रभावित हो गए थे। पर इसका अर्थ यह तो नहीं कि केवल वही क्रांतिकारी सम्मानित हो जो मार्क्सवादी लेनिनवादी और नास्तिक हो! दुर्गा भाभी ने 'भगतसिंह : जो मेरे बहुत निकट थे' लेख में लिखा है– 'सच तो यह है कि क्रांतिकारी समय–समय पर आवश्यकतानुसार दुनिया में पैदा होते हैं और अपने देश व समाज को जो भी उनकी देन (आहुति) होती है, देकर चले जाते हैं। यही उनकी सफलता है। इस संगठन का कोई केंद्रीय मठ भी नहीं बना रह पाता और जो व्यक्ति किसी कारण रह जाते हैं, वे फिर क्रांतिकारी नहीं रह जाते। क्रांति क्षणभंगुर है, स्थाई वस्तु नहीं।'

अब एक नजर बटुकेश्वर दत्त के उपेक्षित जीवन पर डालते हैं। केंद्रीय असेंबली में बम फेंककर भगतसिंह के साथ अपनी गिरफ्तारी देने के बाद वे भगतसिंह के साथ कदम से कदम मिलाकर अडिग होकर चले। राजनीतिक कैदियों को सुविधा दिलाने के लिए भगतसिंह ने जो भूख

हड़ताल की थी उसमें बटुकेश्वर दत्त पूरे समय साथ चले। क्रांतिवीर शिव वर्मा के अनुसार 'यह भूख हड़ताल ६३ दिन चली। भगतसिंह और दत्त ने ३ महीने से ऊपर पार किए।' 'माडर्न रिव्यू' के संपादक रामानंद चट्टोपाध्याय ने अपने संपादकीय में इंकलाब जिंदाबाद को अराजकता और खून खराबे का प्रतीक कहा तो २३ दिसंबर १९२९ को भगत सिंह और बीके दत्त ने अपने दल की तरफ से उत्तर दिया था। इस पत्र में अपना पक्ष स्पष्ट करते हुए उन्होंने क्रांति का अर्थ समझाया। १९ अक्टूबर १९२९ को भी नेताजी सुभाष चंद्र बोस के सभापतित्त्व में होने वाले 'पंजाब छात्र यूनियन' के दूसरे अधिवेशन के नाम भगत दत्त ने अपनी तरफ से संदेश भेजा था।

बाद में दत्त को अलग कर दिया गया। जब वे सैलभ (मद्रास) जेल में आजीवन कारावास की सजा भुगत रहे थे तो भगत सिंह, राजगुरु व सुखदेव को फांसी की सजा सुनाई गई। तब अक्टूबर १९३० में भगतसिंह ने दत्त के नाम पत्र लिखा था कि मैं खुशी के साथ फांसी के तख्ते पर चढ़कर दुनिया को यह दिखा दूंगा कि क्रांतिकारी अपने आदर्शों के लिए कितनी वीरता से बलिदान दे सकते हैं, किंतु तुम्हें आजीवन कारावास का दंड मिला है। तुम्हें जीवित रहकर दुनिया को यह दिखाना है कि क्रांतिकारी अपने आदर्शों के लिए हर मुसीबत का मुकाबला भी कर सकते हैं।

भगतसिंह आदि तो बलिदान पथ के पथिक बन गए। पर दत्त को मद्रास से अंडमान (कालापानी) भेज दिया गया। वहां से १९३७ में उन्हें पटना लाया गया और १९३८ में बंगाल, पंजाब तथा उत्तर प्रदेश में प्रवेश पर प्रतिबंध लगाकर रिहा कर दिया गया। भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लेने पर पुनः बंदी बना लिया गया और ४ वर्ष बाद १९४५ ईस्वी को हजारीबाग जेल (बिहार) से रिहा किया।

आजादी के बाद दत्त जी नवंबर १९४७ में अंजली देवी के साथ गृहस्थी (३७ वर्षीय) बन गए, पर आर्थिक तंगी से बहुत परेशान रहे। पटना में रहते हुए गुजारे के लिए दत्त जी को सिगरेट कंपनी का एजेंट बनना पड़ा। टूरिस्ट गाइड की नौकरी करनी पड़ी। श्रीमती अंजलि दत्त को एक निजी स्कूल में पढ़ाना पड़ा। बिस्कुट, डबल रोटी का एक छोटा सा कारखाना लगाया। भारी नुकसान उठाकर उसे भी बंद करना पड़ा।

> अपने तीन तोले के सोने के बटन बेचकर माताजी ने दो कोठड़ियां बनवाई। उनमें से एक कोठडी आठ रुपये मासिक किराए पर दे दी। शास्त्री देवी ने एक डॉक्टर के यहां मासिक छः रुपये में खाना बनाने का काम किया। फिर भी एक समय कभी कभी खाना मिलता था।

बिस्मिल के पिता पं० मुरलीधर और माता मूलमंत्री देवी

साठ के दशक में पटना में बसों के परमिट दिए जाने थे। दत्त ने भी आवेदन कर दिया। जब वे पंक्ति में खड़े हुए पटना के कमिश्नर से मिले और अपना नाम बता कर कहा कि वह एक स्वतंत्रता सेनानी है तो कमिश्नर ने कहा– 'मैं कैसे मान लूं। आपके पास तो स्वतंत्रता सेनानी वाला सर्टिफिकेट भी नहीं है। पहले लाइए, तब मानूंगा।' यह सुनकर दत्त जी को बहुत अफसोस हुआ–– कि भगतसिंह आदि के साथ उसे भी फांसी क्यों नहीं हुई। कम–से–कम देश याद तो करता। जिस स्वतंत्रता के लिए १५ वर्ष जेल में बिता कर शारीरिक यातना के साथ बीमारी भी मोल ली उस स्वतंत्रता में उन्हें स्वतंत्रता सेनानी भी नहीं माना जाता!

बस परमिट वाली बात पता चलने पर बाद में राष्ट्रपति डॉ० राजेंद्र प्रसाद ने माफी मांगी। संभवतः उसी के परिणामस्वरूप १९६३ ईस्वी में बिहार विधान परिषद ने दत्त जी को अपना सदस्य बनाया। १९६४ में दत्त जी बीमार पड़े। पटना के सरकारी अस्पताल में उन्हें कोई पूछने वाला नहीं था। इस पर उनके मित्र चमनलाल आजाद ने लिखा– 'क्या दत्त जैसे क्रांतिकारी को भारत में जन्म लेना चाहिए? परमात्मा ने इतने महान शूरवीर को हमारे देश में जन्म देकर भारी भूल की है। खेद की बात है कि जिस व्यक्ति ने देश को स्वतंत्र कराने के लिए प्राणों की बाजी लगा दी और जो फांसी से बाल–बाल बच गया, वह आज नितांत दयनीय स्थिति में अस्पताल में पड़ा एडियाँ रगड़ रहा है और उसे कोई पूछने वाला नहीं है।'

आजाद केंद्रीय गृहमंत्री गुलजारी लाल नंदा और पंजाब के मंत्री भीम सैन सच्चर से मिले। इससे सत्ता के गलियारों में हड़कंप मच गया। पंजाब सरकार ने बिहार के मुख्यमंत्री के बी सहाय को लिखा कि यदि पटना में बटुकेश्वर

दत्त का इलाज नहीं हो सकता तो उन्हें दिल्ली या चंडीगढ़ भेज दिया जाए, हम यह खर्च उठाने को तैयार हैं। इस पर बिहार सरकार हरकत में आई। लेकिन तब तक देर हो चुकी थी। २२ नवंबर को दत्त जी को दिल्ली लाया गया। भगतसिंह की माता विद्यावती इन्हें अपना धर्मपुत्र मानती थी। बाद में माताजी को अस्पताल में बुला लिया गया। पंजाब के मुख्यमंत्री रामकिशन ने जब दत्त जी को कुछ देना चाहा तो दत्त जी ने कहा– 'हमें कुछ नहीं चाहिए, बस मेरी इच्छा है कि मेरा दाह संस्कार मेरे मित्र भगतसिंह की समाधि के बगल में किया जाए।' २० जुलाई १९६५ को इस देश के महान गौरव ने अंतिम विदाई ली। अंतिम संस्कार के समय माता विद्यावती हुसैनीवाला में साथ थीं। १९६८ में भगतसिंह आदि के समाधि तीर्थ के उद्घाटन पर ८६ वर्षीया मां ने पहले दत्त की समाधि पर फूलों का हार चढ़ाया।

चंद्रशेखर आजाद से पहले भगतसिंह आदि के दल का नेतृत्व करते थे– अमर बलिदानी पंडित रामप्रसाद बिस्मिल। चंद्रशेखर आजाद बिस्मिल के आस्तिक देशभक्ति पूर्ण व आर्यसमाजी विचारों से बहुत प्रभावित थे। काकोरी कांड में गिरफ्तार होने पर जेल में बंद बिस्मिल को स्वार्थी संसार की असलियत का कटु अनुभव हुआ जो उन्होंने फांसी आने (१९ दिसंबर १९२७) से कुछ दिन पहले लिखी आत्मकथा में वर्णन किया है। सहानुभूति रखने वाले किसी वार्डन के हाथों यह पुस्तक गुप्त रूप से बाहर (संभवतः गणेश शंकर विद्यार्थी के पास) भेजी गई। पंडित गणेश शंकर विद्यार्थी के प्रताप प्रेस से प्रकाशित हुई। ऐसा भी सुनने में आया है कि इसे सबसे पहले भजनलाल बुक सेलर द्वारा आर्ट प्रैस सिंध ने 'काकोरी षड्यंत्र' शीर्षक से छापा था। फिर वर्षों बाद पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी के प्रयास से इस आत्मकथा का पुनर्जन्म हुआ। बिस्मिल जी की गिरफ्तारी और फांसी के बाद उनके परिवार की जो दयनीय दशा हुई उसका वर्णन उनकी क्रांतिकारी बहन शास्त्री देवी ने बड़े मार्मिक शब्दों में किया है।

बिस्मिल जी के परिवार ने बड़ी गरीबी में जीवन बिताया था। पर पुनः क्रांति में कूदने से पहले बिस्मिल जी ने सांझे में कपड़े का कारखाना लगाकर स्थिति सुधार ली थी। जेल में जाने के बाद बिस्मिल जी ने अपने साझीदार मुरालीलाल को लिखा कि जो कुछ पैसा मेरे हिस्से का हो मेरे पिताजी को दे देना। बार–बार लिखने पर भी उसने एक पैसा भी नहीं दिया। उल्टे अकड़ दिखाने लगा और पिताजी से लड़ पड़ा।

शाहजहांपुर में रघुनाथ प्रसाद नामक एक व्यक्ति पर बिस्मिल जी माता पिता की तरह विश्वास करते थे। इनके पास बिस्मिल जी के अपने सब अस्त्र–शस्त्र (पांच) और धन (५०००/–) रखे हुए थे। बिस्मिल जी ने वकील को लिखा कि मेरे रुपए मेरे पिताजी को और हथियार बहन शास्त्री देवी को दे देना। वह भी टालता रहा और कुछ नहीं दिया। घर पर पुलिस का इतना आतंक छाया हुआ था कि उनके परिवार से कोई बात तक नहीं करता था। उनके अपने

(शेष पृष्ठ ३३ पर)

शोक समाचार

मास्टर देवराज आर्य का देहान्त

जींद, नगर के प्रमुख आर्यसमाज सेवी, आर्यसमाज रामनगर जींद के प्रर्व प्रधान, जिला वेद प्रचार मण्डल के पूर्व कोषाध्यक्ष श्री मास्टर देवराज आर्य का गत दिवस लॉकडाऊन के दौरान देहान्त हो गया। मास्टर जी तपे हुए आर्यसमाजी, सुलझे हुए व्यक्तित्त्व के स्वामी थे। सरकारी सेवा में मुख्य अध्यापक की सफल सेवा से निवृत्ति के उपरान्त आपने शिक्षा और साहित्य की सेवा को ही अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया था। आप वानप्रस्थ का जीवन जी रहे थे कि असमय आपके सुपुत्र का देहान्त होने के कारण आपको गृहस्थ के दायित्त्वों को भी पुनः ग्रहण करना पड़ा। फिर भी आप शांतिधर्मी आदि पत्रिकाओं में निरन्तर लेख लिखते थे और यथासमय बाहर प्रवचनार्थ भी जाते थे। महर्षि दयानन्द योग चिकित्सा आश्रम के मासिक सत्संग और वेद प्रचार सभा जुलाना की वेद प्रचार यात्रा में तो उनका विशेष योगदान रहता था। आपका वक्तव्य भी बहुत सरल, सहज और प्रभावशाली होता था। आप एक निःस्पृह सरल, सत्यवादी, स्पष्टवादी व्यक्ति थे। युवाओं को प्रोत्साहित करने में आप विशेष रूचि लेते थे। सादा जीवन उच्च विचार के साथ मन वचन कर्म की एकता और आत्मिक उन्नति के प्रति सजग रहते थे। उनके निधन से आर्यसामाजिक जगत् की महती क्षति हुई है, जिसकी पूर्ति होना बहुत कठिन है।

योग्य कन्या चाहिए

प्रतिष्ठित, निर्व्यसनी, निजी व्यवसायी, **क्षत्रिय चौहान** युवक हेतु योग्य कन्या चाहिये। जन्म तिथि : 28/4/1983, कद : 5 फीट 8 इंच, शैक्षिक योग्यता : एम ए डिप्लोमा इन जर्नलिज्म एंड मास कम्युनिकेशन
निवास : **अलीगढ़**, गौत्र : वत्स, परिवार में माता पिता और युवक स्वयं। दहेज रहित विवाह।
सम्पर्क सूत्र : 9084686625

योग का मुख्य प्रयोजन

दुःखों से छूटना

❑**आचार्य ज्ञानप्रकाश वैदिक,** प्रधान आर्यउप प्रतिनिधि सभा बलिया

यह सत्य है कि सांसारिक वस्तुओं के साथ हमारा सम्बन्ध नित्य रहने वाला नहीं है। इन विषय भोगों को अधिकाधिक भोग कर कोई व्यक्ति अधिक स्थायी पूर्ण सुख प्राप्त नहीं कर सकता। उपर्युक्त सत्य के समान ही यह भी अटल सत्य है कि ईश्वर के साथ हमारा सम्बन्ध सदा से था, आज भी है और आगे भी रहेगा। यजुर्वेद में मंत्र है–

युञ्जानः प्रथमं मनस्तत्त्वाय सविता धियम्
अग्नेज्योर्तिर्निचाय्य पृथिव्या अध्याभरत्। यजुर्वेद ११/१

पदार्थ : (युञ्जानः) योग को करने वाले मनुष्य (तत्त्वाय) तत्त्व अर्थात् ब्रह्म ज्ञान के लिये (प्रथमं मनः) जब अपने मन को पहले परमेश्वर में युक्त करते हैं। तब (सविता) परमेश्वर उनकी (धियम्) बुद्धि को अपनी कृपा से अपने में युक्त कर लेता है (अग्नेर्ज्यो०) फिर वे परमेश्वर के प्रकाश को निश्चय करके (अध्याभरत) यथावत् धारण करते हैं (पृथिव्याः) पृथिवी के बीच योगी का यही प्रसिद्ध लक्षण है।

–ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका (उपासना विषय)

योग का महत्त्व : हम इस प्रकार से समझ सकते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति समस्त दुःखों से छूटकर नित्यानन्द को प्राप्त करना चाहता है। जब तक व्यक्ति योग दर्शन में प्रतिपादित हेय, हेय हेतुः, हान और हानोपाप के स्वरूप को अच्छी प्रकार से नहीं जानता तब तक समस्त दुःखों की निवृत्ति और नित्यानन्द की प्राप्ति नहीं हो सकती।

आज के मनुष्य ने घोर पुरुषार्थ किया है और करता भी जा रहा है। सारी पृथिवी का स्वरूप ही बदल डाला है। तदुपरान्त भी वह समस्त दुःख की निवृत्ति और नित्यानन्द की प्राप्ति नहीं कर पाया। इसी प्रकार चलते रहने पर भविष्य में भी मुख्य लक्ष्य की प्राप्ति की कोई संभावना नहीं है। आज का मनुष्य काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेषादि मानसिक रोगों से दुःखी है। जिसका समाधान वह केवल धन–सम्पत्ति वा भौतिक विज्ञान से करना चाहता है, जिससे कदापि सम्भव नहीं हो सकता। इन मानसिक रोगों का समाधान तो आत्मा–परमात्मा सम्बन्धी अध्यात्म विद्या को पढ़ने–पढ़ाने, सुनने–सुनाने और इसको क्रियात्मक रूप देने से ही सम्भव है, अन्यथा नहीं।

> करना यह होता है कि अविद्या भोगों वाले प्रवाह को विवेक व वैराग्य के बांध से रोककर कल्याण मार्ग की ओर प्रवाह को बदल देते हैं।

वर्तमान में योग के स्थान पर योगा शब्द ही अधिक सुनने में आता है। इस योगा का व्यावहारिक रूप सामने यह आ रहा है कि जब व्यक्ति सांसारिक भोगों को सुख की इच्छा से अमर्यादित रूप में भोगता है तो उस कारण रोगी हो जाता है। तब कुछ शारीरिक व्यायामादि आसनों को करके भोगों को भोगने की क्षमता पुनः प्राप्त करने को योगा कहा जाता है। अर्थात् भोगों की इच्छा से प्रेरित व्यक्ति जब भोगने की क्षमता प्राप्त करने की इच्छा से योगा करना चाहता है। परन्तु योग का यह तात्पर्य नहीं है। सामान्य भाषा में योग को जोड़ कहते हैं, पर यह गणित के योग का अर्थ है। योग दर्शन योग का अर्थ 'युज् समाधौ' आत्मनेपदी दिवादिगणीय धातु में 'घम्' प्रत्यय लगाने से निष्पन्न होता है। अतः योग का अर्थ समाधि अर्थात् चित्त वृत्तियों का निरोध है। योग का स्वरूप क्या है। इसका समाधान समाधिपाद के दूसरे ही सूत्र में किया।

योगश्चित्तवृत्ति निरोधः (यो० १/२)

इसका शाब्दिक अर्थ है– चित्त की वृत्तियों के निरोध को समाधि अर्थात् योग कहते हैं। इस सूत्र में चार शब्द हैं। (१) योग (२) चित्त (३) वृत्ति (४) निरोध। पहला योग का अर्थ तो हम पूर्व ही जान चुके हैं कि समाधि अर्थात् ईश्वर के स्वरूप में मग्नता है।

(२) चित्त को समझें कि यह क्या है। योग दर्शन में जो चित्त है वह मन का ही पर्यायवाची है। हमारे दो प्रकार के करण हैं– (१) अन्तःकरण (२) बाह्य करण। अन्तःकरण के चार भेद जाने जाते हैं– मन, बुद्धि, चित्त व अहंकार। बाह्यकरण में ५ ज्ञानेन्द्रियाँ व ५ कर्मेन्द्रियाँ आ जाती हैं। इसमें अन्तःकरण में जो मन है वह इन्द्रियों के माध्यम से प्राप्त ज्ञान को भीतर पहुँचाता है तथा अन्दर संग्रहीत ज्ञान को बाहर पहुँचाता है। बुद्धि संग्रहीत ज्ञान के आधार पर पक्ष व विपक्ष में जो भारी

हो उसका निर्णय देती है। चित्त वह होता है, जो बाहर से प्राप्त ज्ञान व अनुभव को स्मृति रूप में संग्रहीत करता है। अंहकार अपने होनेपन का बोध कराता है।

योग दर्शन में जिसे चित्त कहा जाता है, वह प्रकृति से बना पदार्थ है। प्रकृति का स्वभाव जड़ है। कारण के गुण कर्म स्वभाव कार्य में आते ही हैं। अतः चित्त एक जड़ पदार्थ है। यह सभी जीवों के पास होता है। परन्तु यह पांच अवस्था वाला है।

(१) क्षिप्त : चंचल अवस्था वाला
(२) मूढ़ : अज्ञान व मोह से ग्रस्त अवस्था है।
(३) विक्षिप्त : कभी स्थिर व कभी अस्थिर को कहते हैं।
(४) एकाग्र : अवस्था जो स्थिर चित्त को कहते हैं।
(५) निरुद्ध : सभी प्रभावों से रहित अवस्था वाला।

इनमें से उत्तम योग निरुद्धावस्था में प्राप्त होता है। इस अवस्था में ही ईश्वर का साक्षात्कार होता है, अन्य में नहीं।

अब तीसरा शब्द है– वृत्ति। जिससे मन व चित्त अपना बाहर–भीतर करता है, उसे वृत्ति कहते हैं। वृत्तियों के मुख्य दो भाग होते हैं। एक क्लेशयुक्त अर्थात् दुःख पैदा करने वाली, दूसरी क्लेश रहित अर्थात् दुःख पैदा न करने वाली। इन्हें योग दर्शन की भाषा में क्लिष्ट और अक्लिष्ट कहते हैं। जैसे कि योग दर्शन में कहा

वृत्तयः पञ्चतय्यः क्लिष्टाक्लिष्टाः। यो० १/५

अर्थात् वृत्तियाँ पांच प्रकार की हैं। उनके भी क्लिष्ट और अक्लिष्ट ये दो मुख्य विभाग हैं। जो वृत्तियाँ मनुष्य को अज्ञान, अधर्म, अनैश्वर्य तथा अवैराग्य की ओर ले जाती हैं वे क्लिष्ट हैं अर्थात् दुःख देने वाली; जो ज्ञान, धर्म, वैराग्य, ईश्वर की ओर ले जाती हैं वे अक्लिष्ट हैं।

हमारी वृत्तियाँ कहाँ जा रही हैं, या हम उन्हें कहाँ भेज रहे हैं। कहाँ भेजना चाहिए व कैसे भेजना चाहिए, इस कला को जानना ही योग है।

काम, क्रोध, लोभ, अहंकार आदि से सम्बन्धित कुसंस्कारों को नष्ट करने का उपाय व विषय क्रमशः हेय, हेय हेतु, हान तथा हानोपाय है, जिसको धारण कर मनुष्य सम्पूर्ण दुःखों से बच सकता है।

(१) हेय : इसका स्वरूप महर्षि पतञ्जलि जी ने योग दर्शन के सोलहवें सूत्र 'हेयं दुःखमनागतम्' में स्पष्ट किया है। इसे इस प्रकार समझ सकते हैं कि जो दुःख भूतकाल में भोग लिया है, वह छोड़ने योग्य नहीं है, क्योंकि वह अब भोक्ता के समीप नहीं है और जो दुःख वर्तमान क्षण में भोगा जा रहा है, वह आगामी क्षण में नहीं रहेगा। उसका भी त्याग नहीं हो सकता है। अत एव जो भविष्य कालिक दुःख है, वही छोड़ने योग्य है। इस दर्शन में इसी का पारिभाषिक नाम हेय है, उससे ही बचा जा सकता है।

(२) हेय हेतु – द्रष्टृदृश्ययोः संयोगो हेयहेतु। (यो द द्वि पा)

हेयहेतु का अर्थ है दुःख का कारण। जीवात्मा का समस्त प्राकृतिक पदार्थों के साथ जो अज्ञानपूर्वक सम्बन्ध है, वह हेयहेतु कहलाता है।

(३) हान :

तदभावात्संयोगाभावो हानं तद् दृशेः कैवल्यम्। (यो० २/२५)

उन अविद्यादि क्लेशों का अथाव होने पर द्रष्टा (जीवात्मा) और दृश्य (प्रकृति) के संयोग का अभाव हो जाता है। वह हान है, वही जीवात्मा का कैवल्य है।

(४) हानोपाय : विवेकख्यातिरविप्लवा हानोपायः।। (२/२६)

जब व्यक्ति को वैराग्य होता है, तब उसका ज्ञान बढ़ता रहता है, परन्तु लौकिक संस्कारों के कारण सम्प्रज्ञात समाधि मध्य मध्य में भंग होती रहती है। यहाँ पर यह बात ध्यान देने योग्य है कि ईश्वर साक्षात्कार होते ही योगी मोक्ष का भागी नहीं होता। मोक्ष का अधिकारी बनने के लिए दीर्घ काल पर्यन्त अभ्यास की अपेक्षा रहती है, तथा यम–नियमों के पालन से ईश्वर प्राणिधानादि साधनों से अविप्लव अवस्था में ले जाना तथा मिथ्याज्ञान की निवृत्ति और पर वैराग्य की उत्पत्ति होती है। पर वैराग्य से असम्प्रज्ञात समाधि की सिद्धि और ईश्वर साक्षात्कार होता है। यह सब अभ्यास और वैराग्य के द्वारा निरोध किया जाता है।

अभ्यास वैराग्याभ्याम् तन्निरोधः।। (१/१२)

अभ्यास और वैराग्य से ही उसका निरोध हो सकता है। निरोध का अर्थ है प्रवाह को बदलना। यहाँ अनेक साधक भ्रमवश निरोध से रोकना अर्थ लेते हैं। जबकि चित्त को रोका नहीं जा सकता है। रोकने से तो दोगुनी और शक्ति से आक्रमण करता है। चित्त रूपी नदी दो और बहने वाली है। एक कल्याण के लिए विवेक वैराग्य की ओर बहती है और दूसरी पाप के लिए अज्ञान अविद्या एवं भोगों की ओर बहती है। करना यह होता है कि अविद्या भोगों वाले प्रवाह को विवेक व वैराग्य के बांध से रोककर कल्याण मार्ग की और प्रवाह को बदल देते हैं। परन्तु दृढ़तापूर्वक बलात् इन्द्रियों को रोकने वाले का तो वैसा ही हाल होगा जैसे नदी के प्रवाह को रोक देवें, पर जल को किसी दूसरी ओर प्रवाहित न करें। कालान्तर में जल उस बांध को तोड़कर और भयंकर रूप में प्रवाहित होगा जो बाढ़ के समान विनाशकारी होगा। निरोध का ऐसा अर्थ मानने वाले और गहरे गड्ढे में जाते हैं। अत एव निरोध का अर्थ हुआ ज्ञानपूर्वक, विद्यापूर्वक प्रवाह को बदलना।

सम्पूर्ण विवेचन से योग का मुख्य प्रयोजन सांसारिक दुःखों से छूटना है, जिसको विस्तार से कह दिया।

सब के कल्याण की प्रार्थना

सर्व भवन्तु सुखिनः

संकलन–हरि कृष्ण आर्य

हे परमपिता परमात्मन्! आपके असंख्य नामों में एक नाम सर्वमंगलमय भी है। आप स्वयं मंगलरूप हैं, और अपने उपासकों, भक्तों और सुख समृद्धि के लिए प्रयासरत मुमुक्षुओं व मुक्तों का, सबका मंगल करने वाले हैं। आप मंगलप्रद हैं, सृष्टि के सब जीवों के अमंगल को हरने वाले हैं। संसार में जो भी प्राणी व आपके सेवक धर्मात्मा पुरुष आपकी आज्ञाओं का पालन करतें हैं, आप की व्यवस्था अनुसार अपना जीवन चलातें हैं, नित्य आप की स्तुति, प्रार्थना, उपासना में लगे रहते हैं, जो आपकी ही शरण हैं, आपको छोड़ अन्य किसी पर आश्रित नहीं, आप उनको कभी निराश नहीं करते। आप की रक्षा में वे जन सदा अमंगल से दूर रहते हैं। संसार में जो आर्यजन आप में अत्यंत प्रेम, श्रद्धा, विश्वास से अपनी आत्मा व अन्तःकरण को आपके ही चिन्तन, मनन, भजन व आराधना में निशदिन लगे रहतें हैं, आप सदा उन का मंगल ही करते हैं। हे मंगलप्रदेश्वर! ऐसे आपके उन सभी सेवक भक्तों के लिए, उपासकों के लिए, आर्य गृहस्थियों के लिए, आप के आज्ञाकारी जनों के लिए, धर्मात्माओं सदाचारियों के लिए, जिज्ञासुओं के लिए व मुमुक्षओं के लिए और ऐसे सभी जनों के लिए हम मंगल कामना करते हैं। हे प्रभो! इन सब का मंगल हो।

हे सर्वजगत् उत्पादक सर्वस्वामिन्! आप सर्वाधार हैं, अनादि हैं, अनन्त हैं। आप के इस विशाल ब्रह्माण्ड़ का विस्तार इतना महान है कि सम्पूर्ण द्युलोक, पृथ्वी लोक, अन्तरिक्ष व आकाश का ज्ञान पाना किसी मनुष्य के लिए सम्भव नहीं। आप की सृष्टि में जल के मध्य, पृथ्वी पर, वायु में और अनेकानेक ग्रहों में भाँति भाँति के असंख्य जीव विद्यमान हैं, जो आप की व्यवस्था के अनुसार आवागमन में हैं। हे सर्वमंगलप्रद परमेश्वर! उन सब जलचर, थलचर, नभचर आदि में विद्यमान सभी जीवों, पशु पक्षियों आदि के लिए हम मंगल कामना करतें हैं। हे प्रभो! इन सब का मंगल हो। हे सर्वव्यापक सर्वत्र विद्यमान विष्णु! आप इस समस्त ब्रह्माण्ड में सब ओर, सभी दशों दिशाओं में सर्वत्र पूर्ण रूपेण रमे हुए हो। सभी दिशाओं, उपदिशाओं और नीचे ऊपर विभिन्न स्थलों पर आपके दिये पदार्थ, अमंगल से हमारी रक्षा करने वाले हैं। आप के रचे पदार्थों की प्राप्ति के लिए सब प्राणी जीव जन्तु, मनुष्य आदि, गौ आदि पशु पक्षी चारों ओर गमन व भ्रमण करतें हैं। हे सब जीवों के अन्तःकरण के साक्षी प्रभो! सभी दिशाओं में सभी समय में किसी का अमंगल न हो। हम सब के लिए सर्वत्र मंगल कामना करतें हैं, सब का मंगल हो।

हे अविद्यांधकारनिर्मूलक, ज्ञान स्वरूप धर्मसुशिक्षक! आप स्वयं ज्ञानस्वरूप, प्रकाशस्वरूप हैं, आप इस संसार से अविद्या के अंधकार को समूल नष्ट करने वाले हैं। धर्म के सुशिक्षक हैं। इसी निमित्त आप ने सब सत्य विद्याओं का ज्ञान 'वेद' सृष्टि के प्रारम्भ में ही मनुष्य मात्र के कल्याणार्थ प्रकाशित कर दिया। वेद का पढ़ना पढ़ाना, सुनना सुनाना और उस पर आचरण करना सब आर्यों का परम धर्म है। इस वेद ज्ञान के प्रचार प्रसार के लिए जो जन इस परम धर्म में अपना जीवन लगा रहें हैं, वे सब आपका ही पुनीत कार्य पूर्ण कर रहे हैं। अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करने वाले ऐसे वेदज्ञ विद्वानों के लिए, सभी ज्ञानवान गुरुओं व आचार्यों के लिए, पंडितों उपदेशकों के लिए, धर्मशिक्षकों व योग शिक्षकों के लिए, परोपकारी सामाजिक कार्यकत्ताओं आदि सब के लिए हम मंगलकामना करते हैं। इन सब का अति मंगल हो।

हे सर्वपालक अन्नदाता सर्वेश्वर! आप की दी हुई इस रत्नगर्भा भूमि से अन्न धन की उत्पत्ति करने वाला कृषक, समय पर वर्षा न होने और असमय पर वर्षा के होने से दुःखी व संतप्त है। हे सर्वशक्तिमान् सकल अमंगलहारी महाराजाधिराज! आप पूर्ववत् ऐसा मंगल कीजिए कि कृषक की इच्छानुसार ही समयानुकूल वर्षा बरसे जिससे जन जन के ताप धुल जाएँ और सब सुखी हों। हम सबके लिए मंगल कामना करते हैं, सर्वत्र मंगल हो, सर्वदा मंगल हो, सर्वथा मंगल हो, सब का मंगल हो।

ओ३म् ओ३म् ओ३म्

आधुनिक जीवन में असाध्य रोगों पर योग का प्रभाव

❒डॉक्टर जगदीप आर्य,
जेजेटी विश्वविद्यालय, चुडैला, झुंझुनू (राजस्थान)
(रजिस्ट्रेशन नंबर-(22418059)

परम श्रद्धेय चिकित्सा जगत् से जुड़े हुए महानुभावो! आज मेरा आप लोगों से रूबरू होने का विषय है 'आधुनिक जीवन में असाध्य रोगों पर योग का प्रभाव'।

सबसे पहले यह समझने की जरूरत है कि रोग असाध्य कैसे बनते हैं? मैं समझता हूं कि सर्दी, खांसी-जुकाम, बुखार, उल्टी-दस्त, सिर दर्द व पेट दर्द आदि तीव्र रोगों का ठीक से इलाज न हो पाना या दवाइयों के माध्यम से इन सभी तीव्र रोगों का दबाया जाना ही जीर्ण या असाध्य रोगों का मूल कारण है। उदाहरण दे करके अपनी बात स्पष्ट करने की कोशिश कर रहा हूं। जुकाम, खांसी को केवल दवाओं के माध्यम से दबाने का प्रयास किया जाए तथा मूल कारणों को दूर नहीं किया जाए तो ये रोग बिगड़ करके नजला, दमा या टीबी का रूप धारण कर लेते हैं। बुखार का बिगड़ा हुआ रूप ही अन्य प्रकार के बुखारों का कारण बन जाता है। जैसे बुखार थोड़ा लंबा चलने पर टाइफाइड का रूप धारण कर लेता है। जोड़ों का दर्द थोड़ा लंबा चलने पर रूमेटाइड अर्थराइटिस का रूप धारण कर लेता है। इस प्रकार सही कारण न समझने से सामान्य रोग भी असाध्य रोगों का रूप धारण कर लेते हैं। सही कारणों को समझते हुए विभिन्न विद्वानों ने अपने-अपने विचार निम्नलिखित रूप से प्रकट किए हैं:-

१ सभी बीमारियों का मूल कारण रक्त का दूषित होना है। (विमल कुमार मोदी, एमडी आधुनिक चिकित्सा पद्धति)

२ सर्वेषामेव रोगानाम् निदानम् कूपिताः मलाः।
कुपितानाम् ही दोषानाम् शरीरे परिधानम्।। (महर्षि चरक)

४ धी धृतिः स्मृति विभ्रष्टः, कर्म यत्कुरुतेऽशुभम्।
प्रज्ञापराधम् तं विद्यात्सर्वदोष प्रकोपणम्।।

जबकि आधुनिक चिकित्सा पद्धति (एलोपैथी) बीमारियों का मूल कारण कीटाणु, वायरस, फंगस, कवक व सूक्ष्म जीवाणुओं को मानती है।

एक्यूप्रेशर चिकित्सा पद्धति बीमारियों का मूल कारण धमनी, शिरा व मेरिडियन में अवरोध को मानती है तथा प्रेशर प्वाइंटों को दबाकर उन रुकावटों को दूर करने का प्रयास करती है।

शरीर में आहार का वही स्थान है जो एक इंजन में ईंधन का है। उदाहरण के लिए यदि पेट्रोल वाली गाड़ी में डीजल डालेंगे या डीजल वाली गाड़ी में मिट्टी का तेल डालेंगे तो क्या गाड़ी चल पाएगी? ठीक उसी प्रकार शरीर की प्रकृति के विरुद्ध भोजन लेने पर और वह भोजन शरीर में कुछ मात्रा में रुक जाने पर शरीर भी इंजन की तरह खराब हो जाता है। इसी खराबी को कोई साध्य या असाध्य रोग का नाम दे दिया जाता है।

अब समझने की बात यह है कि क्या इन सभी सिद्धांतों में आपस में कोई सहसंबंध है या नहीं है? मैं समझता हूं कि इन सभी सिद्धांतों में आपस में बहुत गहरा सहसंबंध है। इस सहसंबंध को परिभाषित करते हुए मैं आपको बताना चाहूंगा कि जब हम अपने शरीर की प्रकृति के विरुद्ध भोजन करते हैं तो दूषित रस का निर्माण होता है। वह दूषित रस हमारे पाचनतंत्र द्वारा सोख लिया जाता है तथा फिर उस रस वाले दोष हमारे रक्त में भी पहुंच जाते हैं। रक्त से ये दोष मांस, मेद, अस्थि, मज्जा व शुक्र आदि सभी धातुओं में पहुंच जाते हैं। ये दोष या विकार जहां भी जाकर रुकेंगे, उन्हीं स्थानों पर शरीर में सूक्ष्म जीवाणु, कीटाणु, वायरस, फंगस, गठिया आदि का रूप धारण कर लेते हैं तथा कई बार धमनी और शिराओं में रुकावटें पैदा हो जाती हैं। यह गंदगी और रुकावट ही सभी प्रकार की बीमारियों का मूल कारण है। यह गंदगी शरीर के किस हिस्से में है, कितनी मात्रा में है व किस प्रकृति की है, इसको समझने के लिए बीमारियों का नामकरण किया गया है।

उदाहरण के लिए गंदगी कफ प्रकृति की है तथा नाक की श्लेष्मिक झिल्ली में आकर रुक गई है तो जुकाम या नजला हो जाएगा और यही गंदगी फेफड़ों में आकर रुक

इस शरीर रूपी घड़े को शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक रूप से स्वस्थ व स्वच्छ बनाने के लिए सात साधनों का प्रयोग करना चाहिए

जाती है तो दमा, टी०बी० का रूप धारण कर लेती है। यही गंदगी थोड़ी सी अपनी प्रकृति बदल कर पित्त के साथ मिलकर अपने विभिन्न रूप प्रकट करती है तो शरीर में विभिन्न प्रकार के असंतुलन पैदा हो जाते हैं। तब व्यक्ति शारीरिक, मानसिक व आत्मिक रूप से रोगी हो जाता है।

विभिन्न चिकित्सा पद्धतियां अपने-अपने तरीकों से संतुलन स्थापित करने का प्रयास करती हैं। एक बड़ा सर्जन काट-छांट या सर्जरी के माध्यम से शरीर में संतुलन बनाने का प्रयास करता है तो आयुर्वेद का विद्वान पंचकर्म, आहार व औषध के माध्यम से संतुलन बनाने का प्रयास करता है। एक एलोपैथी का डॉक्टर एंटीबायोटिक, पेन किलर और सेटेराइड के माध्यम से संतुलन बनाने का प्रयास करता है। वास्तव में असंतुलन ही रोग है, रुकावट ही रोग है, गंदगी ही रोग है और इस रुकावट को दूर करना, गंदगी को शरीर से बाहर निकालना तथा शरीर की क्रिया प्रणाली में संतुलन स्थापित करना ही स्वास्थ्य की तरफ कदम बढ़ाना है। योग विद्या का जानकार व्यक्ति आहार, निद्रा और ब्रह्मचर्य का ख्याल रखते हुए शरीर में संतुलन स्थापित करता है क्योंकि शरीर में आहार का वही स्थान है जो एक इंजन में ईंधन का है। उदाहरण के लिए यदि पेट्रोल वाली गाड़ी में डीजल डालेंगे या डीजल वाली गाड़ी में मिट्टी का तेल डालेंगे तो क्या गाड़ी चल पाएगी? ठीक उसी प्रकार शरीर की प्रकृति के विरुद्ध भोजन लेने पर और वह भोजन शरीर में कुछ मात्रा में रुक जाने पर शरीर भी इंजन की तरह खराब हो जाता है। इसी खराबी को कोई साध्य या असाध्य रोग का नाम दे दिया जाता है। ऐसी स्थिति में कोई भी योग-विद्या का जानकार व्यक्ति जो विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों में सहसंबंध स्थापित करना जानता है तथा श्रम, संयम, भोजन, शोधन और सामाजिक परिवेश में संतुलन स्थापित करने की कला को समझता है तो रोग पर विजय प्राप्त की जा सकती है। योग का प्रमाण देकर अपनी बात को आगे बढ़ाने का प्रयास कर रहा हूं।

शोधनं दृढ़ता चैव स्थैर्यं धैर्यं च लाघवम्।
प्रत्यक्षं च निरलिप्तं घटस्थ सप्तसाधनम्।। (प्रथ० 9-)

घेरंड जी कहते हैं कि इस शरीर रूपी घड़े को शारीरिक, मानसिक व आध्यात्मिक रूप से स्वस्थ व स्वच्छ बनाने के लिए सात साधनों का प्रयोग करना चाहिए उनमें- शोधन, दृढ़ता, स्थिरता, धैर्य, लघुता, प्रत्यक्ष व निर्लिप्त शामिल हैं। इनमें षट् कर्मों से शोधन होता है। आसनों से दृढ़ता आती है। मुद्राओं से स्थिरता आती है। प्रत्याहार से धीरता आती है। प्राणायाम से हल्कापन और स्फूर्ति आती है। ध्यान से आत्मा का प्रत्यक्ष होता है तथा समाधि से व्यक्ति निर्लिप्त हो जाता है। इन बातों में जरा भी संशय नहीं करना चाहिए। विषय के विस्तार को देखते हुए मैं केवल शोधन के परिणाम आप लोगों के सामने रखने का प्रयास करुँगा।-

शौचात्स्वाङ्गजुगुप्सा परैरसंसर्गः।।

पूर्ण रूप से शौच का पालन करने पर व्यक्ति को अपने अंदर की गंदगी स्पष्ट दिखाई देने लगती है तथा उसे अपना शरीर डस्टबिन दिखाई देने लगता है। दूसरे व्यक्तियों का शरीर भी गंदगी का ढेर दिखने लगता है, जिससे व्यक्ति दूसरों के संसर्ग में, संपर्क में नहीं जाता है।

सत्वशुद्धिसौमनस्यैकाग्र्येन्द्रयजयात्मदर्शन योग्यत्वानि च।।
(साधनपाद ४१)

सत्त्व की शुद्धि हो जाती है, मन प्रसन्न रहने लगता है, इंद्रियों में एकाग्रता आ जाती है और इन पर विजय प्राप्त हो जाती है तथा आत्मा व परमात्मा को समझने की योग्यता प्राप्त हो जाती है।

सत्त्व-पुरुषयोः शुद्धिसाम्ये कैवल्यमिति।। (वि पा ५५)

बुद्धि व जीवात्मा की समान रूप से शुद्धि हो जाने पर जीवात्मा का मोक्ष हो जाता है।

अब विचार करने की बात यह है कि योगांगों का पालन करने से सत्त्व की शुद्धि हो जाए, मन प्रसन्न रहने लगे, इंद्रियां बलवान व एकाग्र हो जाएँ तो क्या शरीर फिर भी रोगी रहेगा? कदापि नहीं। ऐसी स्थिति में शरीर किसी भी रोग पर विजय प्राप्त कर सकता है। लेकिन यह विजय ऐसे ही प्राप्त नहीं होती है। इसके लिए आपको श्रम, संयम, भोजन, शोधन व सामाजिक परिवेश में संतुलन स्थापित करने का प्रयास करना पड़ेगा। लेकिन इस काम को करने के लिए आपको एक योग्य डॉक्टर, वैद्य या हकीम की आवश्यकता पड़ेगी जो श्री कृष्ण के समान योग्य सारथी की भूमिका निभाते हुए अपने रोगी को किसी भी रोग से बचा ले जाए। इसके डॉक्टर व रोगी के बीच पारस्परिक विश्वास के संबंध हों। डॉक्टर की दृष्टि सबसे पहले रोगी के रोग पर जाए न कि उसकी जेब पर, और रोगी को भी अपने डॉक्टर पर विश्वास होना चाहिए कि मेरा डॉक्टर मेरे लिए ईमानदारी से प्रयास कर रहा है। रोगी को इंद्रियों के सुख से ऊपर उठकर अपने चिकित्सा कर्म को चलाना चाहिए। यदि ऐसा कर सकते हैं तो हम किसी भी असाध्य रोग के ऊपर विजय प्राप्त कर सकते हैं।

जानते हो!

❐आस्था

❍'मैं एथेंस अथवा यूनान का नागरिक नहीं हूँ, मैं पूरे विश्व का आदमी हूँ' ये शब्द सुकरात ने कहे थे।

❍वह कौन सी संख्या है जिसमें 6 जोड़ने या जिसे 6 से गुणा करने पर एक ही परिणाम प्राप्त होता है? (1.2)

❍यदि किसी वस्तु से जरा सी भी रोशनी परावर्तित न हो तो उस वस्तु का रंग क्या होगा? (काला)

❍महाभारत के रचयिता महर्षि वेदव्यास के माता पिता का नाम क्या था? (सत्यवती, पाराशर)

❍परमाणु का विभाजन करने वाला आधुनिक काल का पहला वैज्ञानिक था- अर्वेस्ट रदरफोर्ड

❍हमारे जीवन का लगभग एक तिहाई हिस्सा सोते हुए बीतता है।

❍२४ घण्टे में नवजात बच्चा २१ घण्टे सोता है। बच्चों को दस घण्टे, बड़ों को ७-८ घण्टे और बुजुर्गों को ६ घण्टे की नींद पर्याप्त होती है।

❍लियनार्दो द विंची और विंस्टन चर्चिल कुछ मिनटों की झपकियों से काम चला लेते थे।

☺☺☺हास्यम्☺☺☺

प्रेषक : हर्षित आर्य इण्डस स्कूल, मिर्चपुर

♦अध्यापक- सबसे कड़वा खाना कौन सा है?
प्रवेश- सर, मार खाना।

♦सुरेन्द्र (क्रिकेट मैच देखते हुए) क्यों आदित्य, तुम्हें क्या लगता है, क्या भारत जीत जाएगा?
आदित्य- मुझे नहीं पता, मैं तो लड़ाई झगड़ों से दूर ही रहता हूँ।

♦आदी (गोलू से)- क्यों भाई किस सोच में डूबे हो?
गोलू - क्या बताऊँ यार, मेरी बहन कहती है कि उसके दो भाई है जबकि मेरा तो एक ही भाई है।

♦नरेन्द्र -(डाक्टर से) जी, मेरे दायें पैर में दर्द हो रहा है।
डाक्टर- कोई बात नहीं, उम्र के हिसाब से ऐसा होता है।
नरेन्द्र-लेकिन डाक्टर, मेरे दोनों पैरों की उम्र तो एक ही है।
बच्चा-पिताजी, पाँच रुपये दीजिये, मुझे संसार का नक्शा खरीदना है।
पिता-बेटे, तुम कुछ दिन बाद नक्शा खरीदना-क्योंकि संसार में इतनी धांधली मची है कि मुझे लगता है कि संसार का नक्शा ही बदल जायेगा।

♦लड़का (बुजुर्ग से)-मैं बी०ए० तक पढ़ा हूँ।
बुजुर्ग-अरे बेटा, क्या खाक पढ़ा है? दो ही अक्षर पढ़ा है और वे भी उलटे?

प्रहेलिका:

⌘लाल हरी डिबिया पीले पीले खाने
उनके अन्दर लाल लाल मोती जैसे दाने।।
⌘ऊपर से गिरा बम, उसमें हड्डी ना चम।।
⌘एक डिब्बे में बत्तीसे दाने,
बताने वाले बड़े सयाने।।
⌘कद के छोटे कर्म के हीन,
बीन बजाने के शौकीन
⌘इधर से आऊँ या उधर से आऊँ।
दांत से कुतरूँ कुछ भी न खाऊँ।।
⌘काले वन की काली वासी,
है वो सबके खून की प्यासी।
⌘काली चादर में चावल बंधे।
दिन में गायब रात में मिले।।
⌘कहते हैं वो आता जाता,
पर वह जाता है न आता।।
⌘छोकरी है छोटी, इतनी लम्बी चोटी।।
⌘छोटी सी नार, दे डुबकी हो पार

अनार, ओला, दांत, मच्छर, आरी, जूं, आकाश-तारे, रास्ता, सुई-धागा, सुई

विचार कणिका:

❐प्रतिभा

♦सब सत्य विद्याओं का मूल परमेश्वर है।
-महर्षि दयानन्द

♦संसार में सबसे बड़ा अधिकार सेवा और त्याग से पैदा होता है। -प्रेमचन्द

♦आत्मसम्मान की रक्षा हमारा सबसे पहला धर्म है।
-प्रेमचन्द

♦सोचो कि आज का दिन फिर कभी नहीं आएगा।
-दान्ते

♦सबसे अच्छी पुस्तकें पहले पढ़ डालो, वरना शायद तुम्हें उन्हें पढ़ने का समय ही न मिल पाए। -थोरो

♦इस संसार में प्रत्येक वस्तु संकल्प शक्ति पर निर्भर है। -डिजरायली

♦थोड़ा पढ़ना, ज्यादा सोचना; कम बोलना, ज्यादा सुनना, यही बुद्धिमान बनने के उपाय हैं।

♦उपदेश देना सरल है, उपाय बताना कठिन है।
-रवीन्द्रनाथ टैगोर

ठग बिल्ली

एक घर में चूहे ने बड़ा बिल बना रखा था। कई दिनों से एक मोटी बिल्ली वहाँ चूहा पकड़ने के लिए ताक लगाए बैठती, पर डर के मारे चूहा बिल से बाहर नहीं निकलता। आखिर बिल्ली थी बड़ी चालाक। एक दिन बिल्ली बिल के अन्दर थोड़ा सा मुंह लगाकर फुसफुसाई– एक बात बताओ चूहे भाई, अंदर बैठे बैठे क्या करते हो? कभी राम का नाम भी लिया करो। 'हाँ मौसी मैं तो राम–राम शिव शिव का सुमिरन करता ही रहता हूँ।' चूहे ने जरा सा मुँह बाहर निकालकर कहा।

चूहे की जो गंध आई तो बिल्ली के मुँह से लारें टपकनी शुरू हो गई।

'तभी मैं कहूँ कि यहाँ पानी जैसा क्या है!' चूहा बोला 'अरे तुम्हारे भाग्य से यहां पवित्र जल की धारा फूटी है। यह पवित्र जलधारा तुम्हारे पाप धोने आई है। अब तू शिवजी का ध्यान लगा और कसकर आँखे मींच। समय न गवांओ, इस पवित्र जल में डुबकी लगाओ।'

आँखें मूंदकर चूहे ने छलांग लगाई और सीधा बिल्ली के खुले हुए मुंह के अन्दर चला गया। बिल्ली ने झटपट मुंह बंद कर लिया।

चूहा घबराकर बोला–यहाँ तो बहुत अंधेरा है व गीलापन भी है। बिल्ली बोली, तुम्हें अपने पापों की सजा मिल रही है, इसलिए नरक के अंधेरे में पड़े रहो। शीघ्र ही यह पानी तुम्हें बहाकर स्वर्ग ले जाएगा। वहाँ पहुँचकर तुम शांति पा सकोगे।'

इस तरह बिल्ली झटपट चूहे को निगल गई।

शिक्षा : आंखें मूंदकर किसी के झूठे बहकाने पर विश्वास मत करो। हमेशा अच्छे बुरे परिणाम के बारे में सोच समझकर निर्णय लेना चाहिए।

***चांद वर्मा**

तकदीर किसे कहते माता,
मिलती कहाँ बता दो माता।
मैं भी जाकर ले आऊँगी,
बस तुम राह दिखा दो माता।
कमतर नहीं आपकी बेटी,
उठ सबको बतला दो माता।
बिन पंखों के उड़ जाऊँगी,
थोड़ा सा मुस्का दो माता।
पापा आसमान का तारा,
मेरी जगह बता दो माता।
तकदीर लिखूंगी खुद अपनी,
पलक जरा झपका दो माता।।

पहले बैल्ट लगाओ पापा,
फिर गाड़ी चलाओ पापा।
माना मैं छोटा बच्चा हूँ,
इतना नहीं बनाओ पापा।
सीट बैल्ट है बहुत लाजमी,
फिर क्यों आँख चुराओ पापा।
पुलिस अंकल नहीं देख रहे,
ये कह मत बहलाओ पापा।
सिर्फ जिंदगी नहींआपकी,
हमें थ्यान में लाओ पापा।
सुरक्षा हटी दुर्घटना घटी,

❐शाकुन्तला काजल 'शाकुन'

भारत माता

प्रेमचन्द्र गुप्त 'विशाल'

देश धरम का जिससे नाता,
वो है मेरी भारत माता।
मेरा जीवन जिसको अर्पित,
वो है मेरी भारत माता।।
जिनके सर पर ताज हिमालय,
सूरत चान्दी सी चमकाता।
जिनके चरणों को धोये सागर,
वो है मेरी भारत माता।

मेरी दीदी

मेहनत से मुझे पढ़ाती,
मेरी प्यारी अच्छी दीदी।
अच्छी बातें मुझे सिखाती,
बड़ी दयालु हैं मेरी दीदी।
मेरी सेवा हरदम करतीं,
मेरी भोली भाली दीदी।
खेलो कूदो सदा समय से,
मुझसे कहती मेरी दीदी।

भजनावली

ऐतिहासिक भूलें

बिना विचारे काम करे जो वह फिर पीछे पछतायेगा।
निकल गया जो समय हाथ से वह समय हाथ ना आयेगा।

रावण ने भाई बिना विचारे उठाई जनक दुलारी थी।
भाई और पत्नी ने समझाया पर गलती नही सुधारी थी।
हनुमान और अंगद ने कही ना उनकी बात विचारी थी।
विभिक्षण भाई को तो दुष्ट ने लात कमर में मारी थी।
ऐसी गलती करने वालों के यहाँ पुतले जगत जलायेगा।।

बिना विचारे राजा शान्तनु सत्यवती को ब्याह लाया।
बिना विचारे देवव्रत ने भीष्म प्रतिज्ञा कर अनर्थ ढाया।
बूढ़े की शादी करवा दी और खुद ब्रह्मचारी वो कहलाया।
अपनी शादी करवाता क्यों ना उस बूढ़े को धमकाया।
फिर बिना विचारे राजा की दो बेटी नही उठायेगा।।

बिना विचारे चला दई क्यों भारत में ये जड़ पूजा।
किसी के पैर किसी का सर और किसी का धड पूजा।
कहीं नंगी प्रतिमा पूजी, और कहीं बाबा औघड़ पूजा।
कहीं कहीं तो बना भयंकर शकल बना गड़बड़ पूजा।
बिन खाने वाले को खिलाये तो वो मूर्ख कहलायेगा।

बिना विचारे कुछ लोगों ने जातिवाद फैलाया है।
ये छोटा और मै हूँ बड़ा पंथों को दिया बढ़ावा है।
कुछ पोप पुजारी पंडों ने यहाँ भारी जुर्म कमाया है।
कहकर नीच अपने भाईयों को अपनों से दूर हटाया है।
होते हुये हमारे ना कोई, मंदिर में चढ़ पायेगा।।

इसी छुआ छात ने तो फिर विधर्मी वह बनाये हैं।
कहते थे गौ मात गऊ पर उन्होंने ही छुरे चलाये हैं।
सात लाख काश्मीर से हिन्दू उन्हीं ने मार भगाये हैं।
उनके ही डर से कुछ बचकर पाकिस्तान से आये हैं।
रामनिवास इनको समझाने में कब तक मगज खपायेगा।।

आजादी की कीमत

नहीं स्याही से लिखा गया आजादी का इतिहास सुनो।
लिखा गया है आखिर कैसे क्या हुआ नहीं आभास सुनो।।

आजादी के लिए शिवा ने एक दिन और रात किया था।
मुगलों से लड करके कितने किलों को जीत लिया था।
म्हारा राजस्थान पढो, लाखों ने खून दिया था।
महाराणा प्रताप ने अकबर नहीं सोने दिया मिया था।
बंदे वीर वैरागी का चिमटों से नोंच दिया मांस सुनो।।

रामनिवास आर्य भजनोपदेशक
भारत नगर खेड़े के पास
काबड़ी रोड़ पानीपत
फोन 9416437317

स्वराज शब्द का सबसे पहले ऋषि ने नाद गुंजाया था।
भारत के वीर जवानों ने, इसे सार्थक कर दिखलाया था।
लाला लाजपत, भगतसिंह इसे बिस्मिल ने अपनाया था।
तांत्या टोपे श्री कंवर सिंह रानी ने कहर बरपाया था।
सात समंदर पार गया वह कैसे वीर सुभाष सुनो।

आजादी के लिए आर्य गये जेल अस्सी सौ में।
चंद्रशेखर आजाद शेर वह गर्जे थे भरकै छो में।
नर्माई दिखलाना छोड़ो तुम गांधी जी हो किस टोह में।
हाथ जोड़ने से ना मिलती, क्यों गोरों के आ रहे मोह में।
भारत माँ के टुकड़े कर दिये कर दिया सत्यानाश सुनो।

आर्यों ने करी नादानी गैरों को सत्ता सोंप दई।
उन गैरों ने भारत माँ के सीने में कैंची घोंप दई।
अंग्रेजों के ही बच्चे थे वही ना छोड़ी सोच गई।
शहीदों के अरमान थे जो वह उम्मीदें नोच दई।
रामनिवास गद्दारी देख हो गया है आज निराश सुनो।।

भगवान की माया तर्ज : मुझे इश्क है तुम्ही से।

कोई ना जान पाया भगवन तुम्हारी माया।
किस भांति इतना सुन्दर संसार है रचाया।
लिया कौन सा मसाला धरती बनाई अद्भुत ।
चंदा में डाली ठंडक, सूरज में डाली पावक।
सरितायें और समन्दर जिनमें है जल समाया।।
देखो वह बगीचे, पुष्पों की क्या सुगंधी।
बहुतों मे तेज खुशबू, कितनों मे डाली मंदी।
चंपा,चमेली,ने तो सबका है मन लुभाया।।
फलदार पौधे इतने जिनमें है गुण निराला।
मीठे बनाये कितने, खट रस किसी में डाला।
खाने के बाद मुख से वाह वाह निकल के आया।।
शक्लें भी सबकी न्यारी, बोली किसी की प्यारी।
कोई बोलता है ऐसे, जैसे हो पानी खारी।
गंधर्व स्वर किसी का पंचम किसी का पाया।।
रचना रचाके दाता इसमें ही रम रहा है।
फिर भी पता है पूछे ये ही तो गम रहा है।
क्यों **रामनिवास** तूने उसका भजन ना गाया।

अनुकरणीय

डी० ए० वी० के क्षेत्रीय निदेशक डॉ० धर्मदेव विद्यार्थी का अनुकरणीय कार्य

पहले भी निर्धन कन्याओं की शादियों का कीर्तिमान बना चुके हैं विद्यार्थी

डीएवी पब्लिक स्कूल जींद के प्राचार्य और डीएवी संस्थाओं के क्षेत्रीय निदेशक डॉ० धर्मदेव विद्यार्थी कोरोना की महामारी से जंग लड़ने वालों की सहायता के लिए मास्क बनाकर निशुल्क वितरित कर रहे हैं। उनके आह्वान पर डीएवी स्कूल के स्टाफ मेंबर भी अपने घर पर रहते हुए मास्क बना रहे हैं तथा अपने मोहल्ले की जरूरत को पूरा कर रहे हैं। डॉक्टर धर्मदेव विद्यार्थी ने डीएवी और आर्य युवा समाज की ओर से जींद शहर में 50,000 मास्क निशुल्क बांटने का लक्ष्य रखा था, जिसका पहला चरण पूर्ण कर लिया गया है। दूसरे चरण में 50,000 से भी अधिक 1,00,000 तक मास्क बनाने की योजना है। उन्होंने बताया की डीएवी स्कूल की अधिकांश अध्यापिकाएं स्वयंसेवी के रूप में कार्य कर रही हैं तथा प्रत्येक अध्यापिका को आर्य युवा समाज की ओर से कपड़ा उपलब्ध उपलब्ध करवाया गया है तथा प्रत्येक अध्यापिका ने 500 मास्क बनाने का लक्ष्य रखा है। हरियाणा सरकार के आदेशानुसार प्रत्येक व्यक्ति को कोरोना से लड़ने के लिए मास्क पहनना अनिवार्य है। इस आदेश की पूर्ति के लिए डीएवी पब्लिक स्कूल, जींद प्रतिदिन हजारों मास्क बांट रहा है। नगर के मुख्य गुरुद्वारे, अन्य सामाजिक संस्थाओं को भी तथा सिविल हस्पताल में भी निशुल्क मास्क बांटे जा रहे हैं। इसके अतिरिक्त कोई भी व्यक्ति डीएवी स्कूल के गेट से निशुल्क मास्क प्राप्त कर सकता है तथा किसी भी मोहल्ले में रहने वाली डीएवी स्कूल की शिक्षिका के घर से निशुल्क मास्क प्राप्त किया जा सकता है। डीएवी स्कूल ने अपनी साइंस लैब में सैनिटाइजर तैयार करके उसकी 1000 बोतल भी निशुल्क बाटी हैं। डॉक्टर धर्मदेव विद्यार्थी के अनुसार मास्क वितरण की यह सेवा निरंतर उपलब्ध रहेगी। उनके इस कार्य में डीएवी पब्लिक स्कूल, सफीदों की प्राचार्या तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती रश्मि विद्यार्थी भी अपने स्टाफ के सदस्यों के साथ सहयोग कर रही हैं। (कास)

आर्य नेता रामनाथ सहगल का महाप्रयाण

महर्षि दयानन्द टंकारा ट्रस्ट के मन्त्री, डी ए वी मैनेजिंग कमेटी के सचिव, आर्यजगत के प्रसिद्ध नेता सर्वप्रिय सदैव प्रसन्नचित्त रहने वाले और सबके आदरणीय श्रीमान बाबू रामनाथ जी सहगल का निधन समस्त आर्यजगत की अपूरणीय क्षति है। आप सदैव आर्य समाज के एक मजबूत स्तम्भ सदैव आर्य समाज के लिए समर्पित रहे। आपकी वेद भक्ति और ऋषि भक्ति, समाज के त्याग व समर्पण प्रशंसनीय है। आपका जीवन हमारे लिए प्रेरणादायक है और सदैव रहेगा। आपने आर्य समाज और स्वामी जी की विचारधारा को आगे बढ़ाते हुए समाज को शिक्षित करते हुए डी ए वी मैनेजिंग कमिटी के आप उपप्रधान थे तथा बाबू दरबारी लाल जी के साथ मिलकर ६०० से अधिक डी ए वी स्कूलों की स्थापना की और शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया। कही भूकंप या प्राकृतिक आपदा हो आर्य समाज के कार्यकर्ता आपके कुशल नेतृत्व में सेवा करने पहुंच जाते थे, आपने अपने अथक परिश्रम से ऋषि भक्ति का परिचय देते हुए महर्षि दयानंद जी जन्मभूमि टंकारा को भी एक ऐतिहासिक रूप दिया। यही नहीं आप हमेशा आर्य युवाओं के हितैषी रहे, उन्हें प्रेरित करते रहे। आज आप हमारे बीच नहीं लेकिन आपकी समाज सेवा की लग्न, मेहनत और मजबूत इच्छा शक्ति हमें हमेशा प्रेरणा देती रहेगी।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सभी पदाधिकारी एवं समस्त सदस्यगण दिवंगत आत्मा के प्रति सादर विनम्र श्रद्धांजलि व्यक्त करते हैं। उनका प्रेरणादायक जीवन दीर्घकाल तक आर्यजनों का मार्गदर्शन करेगा।

कोरोना त्रस्त हिन्दुओं को पाकिस्तानी भेदभाव से बचाया जाए : मिलिंद परांडे

नई दिल्ली। अप्रैल १६, विश्व हिन्दू परिषद के केन्द्रीय महामंत्री श्री मिलिन्द परांडे ने पाकिस्तान में अल्पसंख्यक हिन्दुओं के साथ हो रहे भेदभाव को लेकर क्षोभ व्यक्त करते हुए उनके जीवन रक्षार्थ संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार आयोग तथा भारत सरकार से अपील की है। उन्होंने कहा कि वैश्विक स्तर पर कोरोना वायरस का महा प्रकोप है। सभी देशों में इसे पराजित करने हेतु युद्ध स्तर पर सामूहिक प्रयास हो रहे हैं। किंतु पाकिस्तान में ऐसी वीभत्स परिस्थितियों में भी वहां के अल्प-संख्यक हिन्दुओं के साथ धार्मिक भेदभाव हो रहा है। हिंदुओं को न सिर्फ भोजन एवं स्वास्थ्य जैसी जीवन की प्राथमिक आवश्यकताओं से वंचित रखा जा रहा है बल्कि इसके बदले उन पर धर्म परिवर्तन के लिए अनुचित व अमानवीय दबाव भी डाला जा रहा है। मीडिया में आई अनेक रिपोर्टों से यह बात जग-जाहिर है। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान में हिन्दू आज मात्र डेढ़-दो प्रतिशत ही बचा है तो भी, कोरोना जैसी महामारी के समय में भी उसे प्राथमिक अधिकारों से वंचित किया जा रहा है। एक ओर भारत के प्रधानमंत्री सम्पूर्ण विश्व की चिंता कर रहे हैं तो वहीं, पाकिस्तान के प्रधानमंत्री वहां के अपने अल्पसंख्यकों को भोजन एवं स्वास्थ्य जैसी मूलभूत आवश्यकताओं को भी सुनिश्चित नहीं कर पा रहे हैं। यहाँ तक ज्ञात हुआ है कि भीषण परिस्थितियों का अनुचित लाभ उठाकर भोजन के बदले में हिन्दुओं पर धर्मांतरण के लिए भी दबाव बनाया जा रहा है। यह उनके मानवाधिकारों का गम्भीर उल्लंघन नहीं तो और क्या है? उन्होंने विश्व मानवाधिकार आयोग से मांग की है कि वह पाकिस्तान के अल्पसंख्यकों पर हो रहे धार्मिक भेदभाव तथा उत्पीड़न का संज्ञान ले तथा इसमें हस्तक्षेप कर उन्हें तुरंत भोजन एवं स्वास्थ्य सुविधाएं सुनिश्चित कराए। साथ ही उन्होंने भारत के विदेश मंत्रालय से भी निवेदन किया है कि वह भी इस सम्बन्ध में पाकिस्तान पर कूटनीतिक दबाव बना इस्लामिक जिहादियों के अत्याचारों से किसी तरह बचे-खुचे हिन्दुओं की प्राण रक्षा करे।

जारीकर्ता विनोद बंसल राष्ट्रीय प्रक्ता, विश्व हिंदू परिषद अणु डाक : vinodbansal01@gmailAcom

हमारे कुछ महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

आर्यों की
गोत्र परम्परा का वैज्ञानिक
विश्लेषण
लेखक : महीपाल आर्य
पृष्ठ : ४८
मूल्य २० /- लागत मात्र

भारत एक खोज
हमने क्या खोजा?
भारत या इण्डिया
लेखक : राजेशार्य आट्टा
पृष्ठ : ९०
मूल्य ४० /- लागत मात्र

बुद्ध शिक्षा एवं वैदिक धर्म
लेखक : हरिवंश वानप्रस्थी
पृष्ठ : ८८
मूल्य लागत मात्र २०/-

देव गीत
(स्तुति, प्रार्थना और प्रेरणा गीतों का अनुपम संग्रह)
लेखक : सहदेव समर्पित
पृष्ठ : ५० मूल्य २०/- लागत मात्र

चारों पुस्तकों का मूल्य एक सौ रुपये अग्रिम भेजकर पंजीकृत डाक से मंगावें।
रजिस्टरी शुल्क हम वहन करेंगे।
पुस्तक मंगाने व अग्रिम राशि जमा कराने के लिये खाता नं० हेतु सम्पर्क करें- व्हाट्स एप- 9996338552
या पत्र व्यवहार करें- : शांतिधर्मी कार्यालय, पोस्ट बॉक्स नं० 19, मुख्य डाकघर जींद-126102

बलिदानियों की उपेक्षा (पृष्ठ २२ का शेष)

मित्र उनके पास आते हुए डरते थे। ऐसे बुरे समय में महान क्रांतिकारी पंडित गणेश शंकर विद्यार्थी ने लगभग २०००/- चंदा करके बिस्मिल आदि साथियों का अभियोग लड़ने में सहयोग किया। बिस्मिल के पिताजी के लिए पंडित जवाहरलाल ने ५००/- भिजवाए। विद्यार्थी जी इन्हें परिवार के लिए १५/- मासिक देते रहे। जब बहन शास्त्री देवी को पुत्र उत्पन्न हुआ तब विद्यार्थी जी ने एक सौ रुपए सहायतार्थ भेजे और साथ ही यह भी कहा भेजा कि आप यह न समझें कि मेरा भाई नहीं है, हम सब आपके भाई हैं।

बिस्मिल जी की बहन ब्रह्मा देवी इनकी फांसी (मृत्यु) से इतनी दुःखी हो गई कि तीन-चार माह बाद ही इस असह्य शोक से पिंड छुड़ाने के लिए विष खाकर मर गई। थोड़े दिन बाद ही इनका छोटा भाई रमेश बीमार पड़ गया। (संभवतः सुशील चंद्र फांसी से पहले ही चल बसा था) रमेश की चिकित्सा धन के अभाव में (डॉक्टर ने २००/- मांगे थे) ठीक से नहीं हो पाई और वह भी चल बसा। अब घर में खाने को दाने और पहनने को कपड़े न थे। ऐसी अवस्था में उपवास के अतिरिक्त और कोई चारा न था। अंत में उपवास करते-२ पिता श्री मुरलीधर जी भी दुःखों की गठड़ी माता (मूल मंत्री देवी) जी के सिर पर रखकर असार संसार को छोड़ चले। माताजी पर विपत्ति का पहाड़ टूट पड़ा। इसके १ महीने बाद बहन शास्त्री देवी भी विधवा हो गई। इनके पास एक पुत्र ३ साल का था।

अपने तीन तोले के सोने के बटन बेचकर माताजी ने दो कोठड़ियां बनवाई। उनमें से एक कोठडी आठ रुपये मासिक किराए पर दे दी। शास्त्री देवी ने एक डॉक्टर के यहां मासिक छः रुपये में खाना बनाने का काम किया। फिर भी एक समय कभी कभी खाना मिलता था। बच्चा स्याना हुआ तो माताजी ने सबसे फरियाद की कि कोई इस बच्चे को पढ़ा दो। कुछ बन जाएगा। पर शाहजहांपुर में किसी ने पुकार नहीं सुनी। तब तक शास्त्री देवी का देवपुरुष भाई पंडित गणेश शंकर विद्यार्थी भी शहीद हो चुका था। २५ मार्च १९३१ को कानपुर में मजहबी अंधे मुस्लिमों की भीड़ ने छुरे कुल्हाड़ी मारकर उन्हें बेरहमी से मारा था। शास्त्री देवी ने जैसे तैसे करके बेटे को पांचवी तक पढ़ाया। फिर वह मजदूरी करने लगा। पर इस शहीद परिवार को देश का समाज अपराधी की तरह देख रहा था।

माताजी अन्न-वस्त्र के अभाव में जैसे तैसे दिन गुजार रही थीं। एक दिन शीत काल का समय था। माताजी अपने कोठरी में फटा सा कोट लपेटे हुए बैठी थीं। इतने में विष्णु शर्मा जेल से रिहा होकर माताजी के दर्शनों के लिए आ पहुँचे। वीर माता जी की यह दुर्दशा देखकर बहुत हैरान, दुःखी व देशवासियों पर क्रोधित हुए। उन्हें लाखों श्राप दिए और अपना कंबल उतारकर माता को ओढा दिया। फिर बहुत कोशिश करके विष्णु शर्मा ने यूपी सरकार द्वारा स्थापित शहीद परिवार सहायक फंड में से माताजी की पेंशन (६०रुपये) बंधवाई। इससे माता जी के साथ शास्त्री देवी के परिवार (लड़का व बहू) का भी गुजारा होने लगा। पर १३ मार्च १९५६ को माताजी महाप्रयाण कर गईं। पेंशन बंद होने से शास्त्री देवी के परिवार की फिर दुर्दशा हो गई। अन्न वस्त्र के अभाव में जीवन दूभर हो गया। इनका लड़का कुसंग में फंसकर घर से भाग गया। महीनों तक उसका कुछ पता न चला। एक दिन दोनों सास बहू सलाह कर रही थीं कि चलो गंगा जी में डूब जाएं, तभी पंडित बनारसीदास चतुर्वेदी द्वारा भेजे गए चतुर्वेदी ओंकार नाथ पांडे ने कोसमा गांव जाकर देखा कि ये फटे कपड़े पहने हुई थीं और घर में लगभग ५ किलो अन्न था। पांडे जी ने बहन जी को ५ रुपये दिए और बनारसी दास जी को सारा हाल लिखा। उन्होंने इनकी सहायता के लिए अपील निकाली। छोटे बड़े सबसे सहयोग लेकर बनारसीदास जी ने बहनजी की सहायता की और लिखा कि 'आप संकोच न करें, यह पैसा आपका ही है। आप कपड़ा बनवा लीजिए। अन्न भी लेकर रख लीजिए। अब आप मुसीबत न उठाइए। बहुत दुःख आपने सहे। मैं आपको दुःख नहीं होने दूंगा।'

संभवतः बनारसीदास जी की अपील पढ़कर ही गुरुकुल झज्जर के आचार्य भगवानदेव (स्वामी ओमानंद जी) अप्रैल १९५९ में कोसमा गए। बिस्मिल जी के हवन कुंड आदि ऐतिहासिक धरोहर के रूप में गुरुकुल में ले आए। एक वर्ष के लिए बहन जी की ५० रुपये मासिक वृत्ति बांध दी। गुरुकुल के उत्सव पर भी बहन जी को बुलवाकर सम्मानित करते रहे। पंडित बनारसीदास जी ने बहुत कोशिश करके बहन जी की पेंशन ४० रुपये करवाई। (१९६०)

पंडित रामप्रसाद बिस्मिल जैसे चरित्रवान् राष्ट्रभक्त के त्याग व बलिदान को पहचानने में भारतवासियों ने इतनी देर लगा दी, जबकि श्री सुधीर विद्यार्थी के अनुसार तुर्की के राष्ट्रपति मुस्तफा कमाल पाशा ने तो १९३६ में बसे नए जिले (केन्या विस्थापितों के लिए) का नाम ही इनके नाम पर 'बिस्मिल जिला' रख दिया था और इस जिले के अंतर्गत इसका मुख्यालय 'बिस्मिल शहर' के नाम से जाना जाता है। तभी तो कवि को कहना पड़ा-

अच्छाइयों की चर्चा जिनकी जहान में है।
उनका निवास अब भी कच्चे मकान में है

हरयाणवी देसी कहावतें

❑ **भलेराम आर्य,** सांघी वाले 9416972879

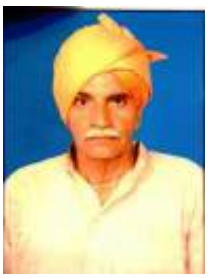

♦बिना बुलाए आदर नहीं,
चाहे कोई जाकर देखो।
♦बिना भूख भोजन नहीं
चाहे कोई खा कर देखो।
♦बिना पसीने स्नान नहीं
चाहे कोई नहा कर देखो।
♦बिना ताकत वजन नहीं
चाहे कोई उठा कर देखो।
♦बिना सुर गाना नहीं चाहे कोई गा कर देखो।
♦बिना श्रोता वक्ता नहीं चाहे कोई बुलवाकर देखो।
♦बिना हाली हल नहीं चाहे कोई बाह कर देखो।
♦बिना गन्ना के रस नहीं चाहे कोई निकलवा कर देखो
♦बिना बिचौलिए समझौता नहीं चाहे कोई करवा कर देखो।
♦बिना मिस्त्री औजार नहीं चाहे कोई बनवा कर देखो।
♦बिना गृहिणी घर नहीं चाहे किसी घर जाकर देखो।
♦बिना बादल बारिश नहीं चाहे कोई करवा कर देखो।
♦बिना राजा राज नहीं चाहे कोई चलवा कर देखो।
♦बिना ध्यान समाधि नहीं चाहे कोई लगा कर देखो।
♦बिना वैद्य चिकित्सा नहीं चाहे कोई करवा कर देखो।
♦बिना गुरु ज्ञान नहीं चाहे कोई आजमा कर देखो।
♦हां भरकर नाटै नहीं ♦चूक कर चाटै नहीं।
♦चलते पानी नै डाटा नहीं ♦गरीब का हक बांटे नहीं
♦बिना आई फसल काटे नहीं।
♦गवाह को पहले समझाओ ताकि नाटै नहीं।
♦सुने बगैर बीच में नुक चुक छांटै नहीं।
♦दूध को खटाई से दूर रखो ताकि पाटै नहीं।
♦पैदल इतने ही चलो कि राही थके नहीं।
♦भोजन अधिक मत करो कदे पचै नहीं।

एक दिन हम चले सैर को दिल में कुछ अरमान थे।
एक तरफ थी झाड़ियां एक तरफ शमशान थे।
चलते-२ एक हड्डी आई पैर के नीचे उसके यूं बयान थे।
चलने वाले संभल कर चल भाई हम भी कभी इंसान थे।।

पाठकों से निवेदन

१ एक स्थान पर १० या अधिक सदस्य होने पर किसी एक सदस्य के पास पैकेट रजिस्टर्ड डाक से भेजते हैं। इसका रजिस्टरी खर्च हम वहन करते हैं। रजिस्टरी और पैकिंग सहित यह लगभग ३००/-(एक वर्ष) होता है। एक सदस्य का रजिस्टरी खर्च वहन करना हमारे लिये संभव नहीं है। यदि आपको अपनी प्रति साधारण डाक से नहीं मिल रही है और आप अपनी एक प्रति रजिस्टरी से मंगाना चाहते हैं तो अपने सदस्यता शुल्क में एक वर्ष के लिए अतिरिक्त ३००/- जोड़कर भेजें। हम चाहेंगे कि आप दस वर्षीय सदस्यता शुल्क भेजने की बजाय अपने आसपास के कम से कम दस सदस्यों का वार्षिक शुल्क भेजें। आपको एक वर्ष तक हर मास १० प्रतियाँ रजिस्टर्ड डाक से प्राप्त होंगीं। यह सहयोग कुछ पाठक कर भी रहे हैं।

२ आप अपनी प्रति ई मेल से भी पीडीएफ में मंगा सकते हैं। उसके लिए कोई अतिरिक्त शुल्क देय नहीं है।

कोरोना की विभीषिका के संदर्भ में हम पाठकों से निवेदन करते हैं कि वे संगठित और एकजुट होकर सरकार और प्रशासन के निर्देशों का सख्ती से पालन करें। घर में प्रतिदिन यज्ञ करें। बच्चों को संध्या सिखाएँ। किसी आर्ष ग्रंथ का और नैतिक शिक्षा की पुस्तकों का स्वाध्याय बच्चों के साथ अवश्य करें।

कोरोना के लॉकडाऊन के मध्य हम पाठकों को इण्टरनेट के द्वारा ही शांतिधर्मी भेज पायेंगे। आप अपने ईमेल या व्हाट्स एप्प पर मंगा सकते हैं।

साथ ही इस अवधि का शुल्क भी पाठकों से नहीं लिया जायेगा।

ईश्वर आपकी रक्षा करे। आप स्वयं अपनी रक्षा करने के लिये निर्दिष्ट उपाय अवश्य करें।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक सहदेव द्वारा प्रियंका प्रिंटर्स, जींद के लिए आचार्य प्रिंटिंग प्रैस रोहतक से छपवाकर, कार्यालय शान्तिधर्मी ७५६/३, आदर्श नगर, सुभाष चौक (पटियाला चौक), जीन्द-१२६१०२ (हरि०) से प्रकाशित। सम्पादक : सहदेव

हम आयुर्वेद की कायाकल्प पद्धति की स्निग्ध एवं समशीतोष्ण गुणधर्मों की शीघ्र एवं निश्चित गुणकारी औषधियों से कठिन, आप्रेशन वाले तथा असाध्य समझ लिये गए रोगों का जड़ से इलाज करते हैं।

❍ हार्ट ब्लॉकेज ❍ गैंग्रीन पथरी (किडनी तथा पित्ताशय की)
❍ विविध अंगों का दर्द ❍ एच आई वी ❍ अन्य अनेक व्याधियाँ

चिकित्सक

राकेश कुमार आर्य (खंडेलवाल) **राजेन्द्र आर्य (खंडेलवाल)**

आर्य आयुर्वेदिक चिकित्सालय

बल्हारपूर (महाराष्ट्र)-442701

मो. 9822723162 7020385470 9325526188

ओ३म्

M- 98964 12152

रवि स्वर्णकार

22 कैरेट हालमार्क आभूषणों के विश्वसनीय निर्माता

नोट : राशि रत्न अंगूठी में फिट किए जाते हैं।

प्रो. रविन्द्र सोनी

नाईयों वाली गली (माता वाली), मेन बाजार, जीन्द

R.N.I. No. 70866/99 शान्तिधर्मी हिन्दी मासिक (अप्रैल, २०२०) P.R. No. : PKL 150-A/2020-22

शांतिधर्मी एक अद्वितीय पत्र है

इसमें परिवार के प्रत्येक सदस्य के लिये स्वस्थ और सुरूचिपूर्ण सामग्री होती है।

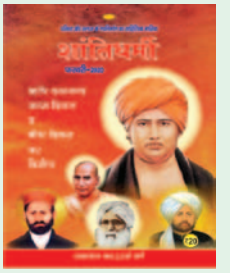

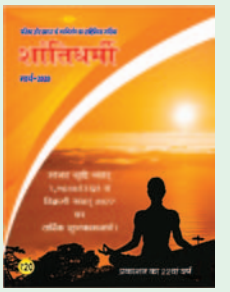

☆ **शांतिधर्मी** में धर्म-दर्शन के रहस्य, राष्ट्र व समाज की ज्वलंत समस्याओं पर अधिकारी विद्वानों के श्रेष्ठ विचार होते हैं।

☆ **शांतिधर्मी** भारतवर्ष के गौरवपूर्ण इतिहास की झलक दिखाता है।

☆ **शांतिधर्मी** वह मार्ग दिखाता है, जिसे पाने के लिये लोग भटक रहे हैं। परिवार में समाज में सह-अस्तित्व व अन्तरात्मा में सुख शांति का सन्देशवाहक है।

☆ **शांतिधर्मी** उस अध्यात्म का प्रचार करता है-जिसे अपनाने में देश-काल, जाति, मजहब, सम्प्रदाय की सीमाएँ आड़े नहीं आतीं। यह सच्चे ईश्वरीय ज्ञान का प्रचारक है।

☆ **शांतिधर्मी** स्वाध्याय भी है और स्वस्थ मनोरंजन का साधन भी।

☆ **शांतिधर्मी** प्रत्येक श्रेष्ठ-धार्मिक-राष्ट्रप्रेमी-मानवतावादी-व्यक्ति के लिये एक विचार-सूत्र है। प्रत्येक श्रेष्ठ परिवार का आभूषण है।

शांतिधर्मी पढ़िये-

अपने प्रति, समाज के प्रति, राष्ट्र के प्रति, ईश्वर के प्रति सर्वांगीण दायित्वों को जानिये।

जीवन के जटिल व गूढ़ रहस्यों को सहज ही सुलझाईये।

मूल्य : एक प्रति : 20.00 वार्षिक : 200.00 10 वर्ष : 1500.00

शान्तिधर्मी कार्यालय
756/3, आदर्श नगर, सुभाष चौक (पटियाला चौक)
जीन्द-126102 (हरियाणा)
फोन 9416253826, 9996338552
E-mail : shantidharmijind@gmail.com